प्रवेशांक
मार्च 2024

भाषा कानन

ई-पत्रिका

राजभाषा प्रकोष्ठ

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय,राँची

माँ एक बोझा लकड़ी के लिए
क्यों दिन भर जंगल छानती,
पहाड़ लाँघती,
देर शाम घर लौटती हो?

माँ कहती है:
जंगल छानती,
पहाड़ लाँघती,
दिन भर भटकती हूँ
सिर्फ सूखी लकड़ियों के लिए
कहीं काट न दूँ कोई जिंदा पेड़ !

(जसिंता केरकेट्टा)

भाषा कानन

भाषा कानन

ई-पत्रिका

प्रवेशांक-मार्च 2024

राजभाषा प्रकोष्ठ
झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय

मुख्य संरक्षक

प्रो. क्षिति भूषण दास
कुलपति

संरक्षक

श्री के.के. राव
कुलसचिव

संपादक

डॉ. उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी'

सलाहकार मंडल

प्रो. देवव्रत सिंह
प्रो. श्रेया भट्टाचार्जी
प्रो. रत्नेश विष्वक्सेन
डॉ० सुदर्शन यादव

संपादक मंडल

श्री सुशांत कुमार, सहायक आचार्य
श्री रचित कुमार, सहायक आचार्य
डॉ. अमृत कुमार, सहायक आचार्य
डॉ. जगदीश सौरभ, सहायक आचार्य
श्री रविकांत कुमार,सांख्यिकी सहायक

संपर्क

राजभाषा प्रकोष्ठ
प्रशासनिक भवन
कमरा संख्या.314 A,द्वितीय तल
संपर्क : 9818311417
bhashakanan.magazine@cuj.ac.in

इसमें प्रकाशित रचनाओ में व्यक्त विचार लेखक/रचनाकारों के अपने हैं। संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेवार नही है।

अनुक्रम

- ❖ कुलपति के कलम से
- ❖ कुलसचिव की कलम से
- ❖ संपादकीय

1. उच्च शिक्षा का केन्द्र बनने की अपार संभावनाएं हैं झारखंड में	-प्रो. देवव्रत सिंह
2. भूमंडलीकरण और हिंदी का भविष्य	-डॉ. उपेन्द्र कुमार 'सत्यार्थी'
3. लेखक कैसे बने: रस्किन बॉन्ड	-डॉ. जगदीश सौरभ
4. मातृभाषा को अपनाकर होगा देश का विकास	-डॉ. अमृत कुल्लू
5. शहरी कृषि: भारतीय कृषि की आज की नीतिगत आवश्यकता	-डॉ. शशांक कुलकर्णी
6. गांधीवादी नेता	-राहुल कुमार
7. विदाई	-चंदन कुमार सिंह
8. गज़ल	-सूरज रंजन
9. ग़ज़ल	-लव कुमार मंडल
10. सांझ	-देवाश्रिता दास
11. ज़िंदगी	-मृत्युंजय कुमार शांडिल्य
12. खूबसूरत पुरुष	-शाम्भवी
13. शिक्षक - एक मार्गदर्शक	-निर्भय कुमार
14. वह गर्व की भाषा है हिंदी	-कौशिक कुमार होता
15. आधुनिक भारत में भ्रष्टाचार	-मृत्युंजय कुमार शांडिल्य
16. फ़रेब के फूल	-त्रिभुवन
17. आओ! गीत लिखो	-समीर राज
18. सुरक्षित लड़कियाँ	-जया मिश्रा
19. मुस्कान झूठी है	-राहुल सिंह 'रूबी'
20. मित्रता, एक अनुभव	-सौम्या सत्यतीर्थ
21. घर की याद	-विशाल राज
22. मूर्ख मनुष्य	-प्रियंका महतो
23. शिक्षा	-बालकृष्ण
24. मन की उदासी	-सुरुचि कुमारी
25. बुद्ध से प्रश्न	-इला रानी
25. राजभाषा प्रकोष्ठ के कार्य और उपलब्धियाँ	-राजभाषा प्रकोष्ठ
26. हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट	-राजभाषा प्रकोष्ठ
27. हिन्दी दिवस रिपोर्ट	-राजभाषा प्रकोष्ठ

प्रो. क्षिति भूषण दास
Prof. Kshiti Bhusan Das
कुलपति
Vice Chancellor
E-mail : vc@cuj.ac.in

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND
(भारतीय संसद के अधिनियम 2009 द्वारा स्थापित)
(Established by an Act of Parliament of India in 2009)
Website : http://www.cuj.ac.in

कुलपति की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा प्रकोष्ठ, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय अपनी ई-पत्रिका 'भाषा कानन' का प्रकाशन कर रहा है। हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में एक रचनाकार मन अप्रत्यक्षतः उपस्थित रहता है जिसे प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास के माध्यम से स्वयं को प्रकाशित करने की आवश्यकता होती है। इस दिशा में 'भाषा कानन' जैसी पत्रिका रचनात्मक पहल के रूप में कार्य करने में सक्षम साबित होगी। किसी भी संस्थान की राजभाषा संबंधी पत्रिका उस संस्थान के सदस्यों के अनुभव एवं विचारों का प्रतिबिम्ब होती है। राजभाषा प्रकोष्ठ की यह पत्रिका भी निश्चित रूप से विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, शिक्षकों एवं छात्रों के मनोभावों और विचारों का प्रतिबिम्ब है । मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि विश्वविद्यालय का राजभाषा प्रकोष्ठ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालयी हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु निरंतर प्रयासरत है। 'भाषा कानन' ई-पत्रिका का प्रकाशन इसी कड़ी का एक हिस्सा है।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने लिखा है कि हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें कुछ चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो, जो हम में गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे। आज प्रेमचंद के इस कथन को समझने की आवश्यकता है कि हमें विरासत में मिली अपनी भाषा और उसके साहित्य का प्रचार-प्रसार आनेवाली पीढ़ी के लिए करें। हमारे देश में विविध समुदायों और संस्कृतियों को जोड़ने में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है और इसने कला, साहित्य और इतिहास को समेकित रुप में प्रभावित किया है । हिंदी अगर भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है तो पत्रिका 'भाषा कानन' इस संस्कृति को परिवर्धित और परिपुष्ट करने का माध्यम बनेगी ऐसा मेरा विश्वास है ।

मैं 'भाषा कानन' के प्रवेशांक के प्रकाशन के अवसर पर सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

क्षिति भूषण दास
(प्रो. क्षिति भूषण दास)

के. कोसल राव
K. Kosala Rao
कुलसचिव
Registrar
E-mail : registrar@cuj.ac.in

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND
(भारतीय संसद के अधिनियम 2009 द्वारा स्थापित)
(Established by an Act of Parliament of India in 2009)
Website : http://www.cuj.ac.in

कुलसचिव की कलम से

अत्यंत हर्ष का विषय है कि झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय का राजभाषा प्रकोष्ठ अपनी ई-पत्रिका 'भाषा-कानन' का प्रवेशांक निकालने जा रहा है। मैं इस संबंध में भाषा कानन की सफलता हेतु अपनी अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

विश्वविद्यालय किसी देश, समाज और संस्कृति का उच्चतम और सर्वाधिक परिष्कृत जीवनरूप होता है। अपनी समस्त क्षुद्र पहचानों को तिरोहित करके, 'अहं ब्रहमास्मि' और समस्त संसार को अपना परिवार मानने की परम्परा 'वसुधैव कटुंबकम्' हमारी परम्परा और पहचान हो। यह पहचान प्राचीन काल में स्मृति रूप में और आधुनिक युग में लिखित रूप में हमारे समक्ष विस्तृत रूप में मौजूद है। भारतीय गौरवशाली ज्ञान परम्परा जितनी वेदों, उपनिषदों, पुराणों इत्यादि में रही है, उतनी ही आधुनिक पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं में हमारा विश्वविद्यालय ज्ञान-विज्ञान, कला, साहित्य इत्यादि विषयों में नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है। 'भाषा कानन' एक ऐसा 'स्पेस' उपलब्ध कराएगी जहाँ पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी, शोधार्थी और विद्यार्थी अपनी रचनात्मकता को सहज और सरल रूप से अभिव्यक्त कर सकेंगे।

मैं 'भाषा-कानन' ई-पत्रिका के सभी सदस्यों, राजभाषा प्रकोष्ठ और विश्वविद्यालय को बधाई देता हूँ।

के.के.राव

(श्री के.के.राव)

संपादकीय

राजभाषा प्रकोष्ठ, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय की ई-पत्रिका 'भाषा कानन' का प्रकाशन ऐसे समय में किया जा रहा है जब सम्पूर्ण भारतवर्ष में 'विकसित भारत@2047' अभियान चल रहा है, जिससे स्वतंत्रता की शताब्दी तक भारतवर्ष को विश्व पटल पर एक विकसित देश के रूप में पहचान दिलाई जा सके। इसमें आर्थिक समृद्धि, सामाजिक उन्नति के साथ भाषाई समृद्धि भी शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी भारतीय ज्ञान परंपरा को मजबूती प्रदान करने हेतु भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था कि 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।' कविवर ने यह इसलिए कहा था, क्योंकि उन्हें हिंदी के महत्त्व का बोध था। हिंदी स्वाधीनता संग्राम के समय स्वतंत्रता सेनानियों के बीच संपर्क का प्रमुख माध्यम रही। हिंदी विविधता में एकता का सूत्र है और वह देश के बड़े हिस्से में अधिकांश लोगों द्वारा सबसे अधिक बोली-समझी जाती है। हिंदी देश के सामाजिक, राजनीतिक, सांप्रदायिक एवं भाषाई समन्वय और सौहार्द का प्रतीक है। आज़ादी के पश्चात भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में 14 सितंबर,1949 को स्वीकार कर लिया गया था तब से लेकर अबतक हिंदी ने भाषा और राजभाषा के रूप में एक लंबी यात्रा कर ली है। इसके बावजूद, भाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी ने अपनी मंजिल पूरी नहीं की है। हिंदी की यह यात्रा अनवरत जारी है।

पत्रिका प्रकाशित करने के पीछे हमारी मूल मंशा न केवल विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाना है बल्कि विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित विभिन्न रचनात्मक

गतिविधियों से भी परिचित कराना है। जिसे हिंदी में कुछ रचने-पढने और उसमें कामकाज करने के प्रति रूचि बढ़े।

हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा गृह पत्रिका के रूप में 'भाषा कानन' का प्रवेशांक प्रकाशित किया जा रहा है और इस बात का सुखद अनुभव हो रहा है कि विश्वविद्यालय के अनेक विभाग और अनुभाग से हमें पर्याप्त मात्रा में रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। आशा है भविष्य में भी इसी प्रकार से हमें रचनात्मक सहयोग मिलता रहेगा।

संपादक मंडल ने 'भाषा कानन' के इस प्रवेशांक को तैयार करने हेतु जो परिश्रम किया है, निसंदेह श्रमसाध्य है। मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद देता हूँ। इस पत्रिका के मुख्य संरक्षक माननीय कुलपति महोदय, संरक्षक कुलसचिव महोदय और सलाहकार मंडल के प्रति सहृदय आभार प्रकट करता हूँ कि आपके मार्गदर्शन और प्रेरणा की वजह से इस पत्रिका का प्रकाशन इतने कम समय में संभव हो पाया। मैं ई-पत्रिका 'भाषा कानन' का यह अंक आपके समक्ष इस उम्मीद के साथ प्रेषित कर रहा हूँ कि आप हमें अपने बहुमूल्य विचारों और सुझावों से अवगत कराएँगे।

डॉ. उपेन्द्र कुमार

हिंदी अधिकारी(प्रभारी)

उच्च शिक्षा का केन्द्र बनने की अपार संभावनाएं हैं झारखंड में

प्रो. देवव्रत सिंह,

जनसंचार विभाग

जैसे ही बच्चा दसवीं की पढ़ाई पूरी करता है, झारखंड में मां-बाप उसे देश के अन्य शहरों में जाकर उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए प्रेरित करने लगते हैं। दिल्ली, मुंबई, चंडीगढ़, देहरादून, पुणे, बैंगलूरू,हैदराबाद इत्यादि शहरों में पढ़ाई कर रहे आसपास के युवाओं का उदाहरण देकर रिश्तेदार भी अकसर किशोर मन को लगातार ये अहसास करवाते रहते हैं कि भविष्य के सुनहरे सपनों को साकार करना है तो स्कूल की पढ़ाई के बाद अपना शहर और परिवार छोड़ देना चाहिए। लेकिन कितने मां-बाप अपने बच्चों को देश के दूसरे शहरों में भेजकर पढ़ाने की क्षमता रखते हैं।इतनी बड़ी तादाद में किसी एक राज्य से उच्च शिक्षा के लिए छात्रों का पलायन करना हैरान करने वालाहै। इनमें से अधिकांश बच्चे नौकरी हासिल करने के बाद कभी झारखंड लौटना नहीं चाहते। इस प्रकार,अपने ही बच्चों की प्रतिभा का लाभ कभी झारखंड को नहीं मिल पाता। स्कूली शिक्षा में तो लंबे समय से ही रांची पूर्वी भारत में विख्यात रहा है लेकिन उच्च शिक्षा के बेहतर मौके अपने ही राज्य में ना मिलने के कारण विद्यार्थियों का पलायन कुछ हद तक एक मजबूरी भी है। साथ ही यह भी एक सच्चाई है कि पिछले एक दशक के दौरान झारखंड में उच्च शिक्षा का जबरदस्त विस्तार हुआ है। लेकिन अभी राज्य के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को आकर्षित करने में नये संस्थान बहुत अधिक सफल नहीं हुए हैं। झारखंड में उच्च शिक्षा का केन्द्र बनने की भी असीम संभावनाएं मौजूद हैं बशर्ते राज्य सरकार आवश्यक नीति निर्माण करे और उसे कारगर रूप से अमल में लाये। बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी (1949), झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय (2009), राष्ट्रीय विधि अध्ययन एवं शोध विश्वविद्यालय (2010), झारखंड रक्षा शक्ति विश्वविद्यालय (2016), भारतीय प्रबंधन संस्थान (2009) जैस अनेक विशेषीकृत विश्वविद्यालय राज्य में मौजूद हैं। झारखंड में कुल 8 राज्य-पोषित विश्वविद्यालय और 13 निजी विश्वविद्यालय भी मौजूद हैं। अधिकांश निजी विश्वविद्यलय पिछले एक दशक में खुले हैं। अलग राज्य बनने के बाद उम्मीद की जा रही थी कि स्कूली शिक्षा की तरह ही रांची उच्च शिक्षा का केन्द्र भी बनेगी। यह राज्य देशभर के प्रतिभावान छात्रों को यहां पढ़ने के लिए आकर्षित करने में सक्षम बनेगा। लेकिन राजनैतिक नेतृत्व की प्राथमिक सूची में उच्च शिक्षा कभी मौजूद नहीं रही। वर्तमान में अधिकांश राज्य विश्वविद्यालयों में शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लगभग आधे पद खाली पड़े हैं। अस्थाई शिक्षकों के भरोसे पढ़ाई चल रही है। राज्य के तकनीकी संस्थानों में भी शिक्षकों की भारी कमी है। राज्य के 17 पॉलिटेकनिक संस्थानों में 432 शिक्षकों की जरूरत है। एक तो राज्य सरकार से मिलने वाला बजट बहुत कम है दूसरी तरफ जितना बजट मिलता है उसका उपयोग भी सलीके से नहीं हो रहा।

इन विश्वविद्यालयों में नये विभाग खोलना या विभागों का विस्तार करना तो दूर की बात है बल्कि वर्तमान विभागों को ढंग से चलाना ही मुमकिन नहीं हो पा रहा है। आंतरिक राजनीति एवं उठापठक के कारण विश्वविद्यालयों में पढाई का माहौल बहुत ही खराब स्थिति में है।

अंतहीन मुकद्दमेबाज़ी और राजनैतिक अड़ंगेबाज़ी के चलते अधिकारियों में विश्वविद्यालय के विकास को लेकर घनघोर उदासीनता व्याप्त है। अधिकांश सरकारी विश्वविद्यालयों के परिसरों की स्थिति दयनीय है। विश्वविद्यालयों में इमारतें, कक्षाएं, प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय इत्यादि का निर्माण एवं उनका रखरखाव अकाद्मिक माहौल के अनुरूप नहीं है। इसके अलावा, बिना राजनैतिक दबाव एवं लालच के योग्य शिक्षकों की निष्पक्ष चयन प्रक्रिया को भी सुनिश्चित करना काफी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। अकसर देखने में आता है कि शिक्षक उसी विभाग में पढ़ा रहे हैं जहां से उन्होंने भी पढाई की थी। अनेक विभागों में शिक्षकों के ही लड़के–लड़कियां अगली पीढ़ी के अध्यापक बन गये हैं।

नियमित कक्षा लगाये बिना ही प्रशासन पर दबाव बनाकर छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण हो रहे हैं। झारखंड के जिला स्तर के सरकारी कॉलेजों का तो और भी बुरा हाल है। कुछ महाविद्यालयों को छोड़ दें तो हजारों युवा बिना नियमित कक्षा लगाये स्नातक बन रहे हैं। यही कारण है कि पढ़े-लिखे बेरोजगार स्नातकों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। यहां शिक्षक, छात्र या प्रशासन में से किसी एक को जिम्मेदार ठहराने के बजाये इस बात पर विमर्श करना आवश्यक है कि इस प्रकार की व्यवस्था किस प्रकार बनी और इसमें सुधार किस प्रकार किये जा सकते हैं। लगभग यही हाल नये स्थापित निजी विश्वविद्यालयों का भी है। इनमें से अधिकांश अपने अस्थाई परिसरों में किराये की इमारतों में चलाये जा रहे हैं। यहां योग्य शिक्षकों का अभाव है। समुचित सुविधाएं उपलब्ध कराये बिना मोटी फीस तो वसूली जा रही है लेकिन गुणवत्ता के मामले में ये विश्वविद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर कहीं नहीं ठहरते। कम वेतन पर सीमित योग्यता वाले शिक्षकों की भर्ती करके उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का सपना कभी सच नहीं हो सकता। राज्य सरकार के भरपूर समर्थन और पर्याप्त देखभाल के बिना किसी भी राज्य में उच्च शिक्षा का विकास संभव नहीं हुआ है। दक्षिण भारत के राज्यों में सरकारों ने नब्बे के दशक में इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों का अभूतपूर्व विस्तार किया। इसमें सरकारी और निजी दोनों प्रकार के संस्थानों का योगदान था। पिछले दो दशक के दौरान दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और पंजाब में बड़ी मात्रा में निजी संस्थानों ने उच्च शिक्षा के प्रसार में योगदान दिया है। सरकारों ने विश्वविद्यालय परिसरों एवं शिक्षा की गुणवत्ता पर मेहनत की और परिणाम ये हुआ कि आज देशभर से युवा वहां पढ़ने जाते हैं। जबकि मनोरम प्राकृतिक दृश्यों, शांत माहौल और खुशनुमा मौसम के चलते रांची में भी उच्च शिक्षा का केन्द्र बनने की असीम संभावनाएं हैं। भारत में उच्च शिक्षा पुनुरूत्थान के दौर से गुजर रही है। झारखंड राज्य ने समय के साथ कदमताल नहीं की तो इस नुकसान की भरपायी अगली कई पीढ़ियों को करनी पड़ेगी।

भूमंडलीकरण और हिंदी का भविष्य

डॉ. उपेन्द्र कुमार 'सत्यार्थी'
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग

आज भूमंडलीकरण का युग है। भारत में 1991 में अपनाई गई नई आर्थिक नीति से वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण की शुरुआत हुई। वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के नए आर्थिक परिदृश्य ने सूचना क्रांति की मदद से पूरी दुनिया को एक गांव में तब्दील कर दिया। कंप्यूटर और इंटरनेट ने दुनिया के एक कोने को दूसरे कोने से जोड़ दिया, भौगोलिक दूरी के मायने बहुत कम हो गए। सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी क्रान्ति ने पूंजीवाद को विश्व-बाजार की अवस्था में पहुंचा दिया। जिसे पूंजी-निर्माण की गति तेज हुई और जिससे बहुराष्ट्रीय कंपनियों का तेजी से आगमन होने लगा। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों, विशेषकर टेलीविजन ने अपनी विराट और निर्णायक उपस्थिति दर्ज की। सेटेलाइट युग में प्रवेश करने के साथ ही भारत भी इस वैश्वीकरण की गिरफ्त में आया और सम्पूर्ण विश्व में तेजी से सूचनाओं का आदान-प्रदान होना शुरू हुआ। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया से हिन्दी भाषा और साहित्य भी प्रभावित हुआ। इसके स्वरूप व प्रवृत्ति में व्यापक परिवर्तन हुआ। भूमंडलीकरण के इन तीन दशकों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आशातीत और विस्मयकारी वृद्धि आयी है। सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। इसके बिना ग्लोबल हिन्दी की कल्पना ही नहीं की जा सकती। आज हिन्दी भाषा का भूमंडलीकरण हो गया है और वह अपनी प्रबल उपस्थिति दर्ज कर रही है। एक दौर था जब ब्रिटिश शासन अंग्रेजी भाषा के माध्यम से संपूर्ण विश्व पर अपना एकाधिकार चाहते था और हिन्दी को उसके ही देश में असभ्य और नीच लोगों की भाषा कहकर पददलित कर दिया था। आज वही हिन्दी अंग्रेजी के समकक्ष बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए अपनी महत्ता को प्रतिपादित कर रही है। ये सब भले ही बाज़ार को ध्यान में रखकर हो रहा हो। लेकिन सच यही है कि इन दिनों हिंदी की मांग वैश्विक स्तर पर बढ़ी है। अमरीका जैसा देश अपने यहां लगभग सौ संस्थानों में हिंदी भाषा शिक्षण एवं प्रशिक्षण का कार्यक्रम चला रहा है। पश्चिम के अन्य देशों के संस्थानों में भी हिंदी शिक्षण का कार्यक्रम चल रहा है।

यदि जापान की बात करें तो यहाँ हिंदी की पढ़ाई सन 1908 से प्रारंभ हुई, जिसे ज्यादातर व्यापार करने वाले लोग पढ़ाया करते थे, पर बाद में इसका पठन-पाठन विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा किया जाने लगा। जापान में हिंदी के पठन-पाठन में हिंदी फिल्मी गीतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आज वहां सात एफएम रेडियो स्टेशन भारतीय संगीत का प्रसारण करते हुए जापान में हिंदी की उपस्थिति को दर्ज कराते हैं। केवल टोक्यों यूनिवर्सिटीज ऑफ़ फॉरन स्टडीज की लाइब्रेरी में ही 60-70 हजार के करीब हिंदी की पुस्तकें और पत्रिकाएं हैं। इस प्रकार हिंदी की व्यापकता के कारण दुनिया के लगभग 175 देशों में हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक केंद्र बन गये हैं। आज हिंदी का शिक्षण एवं प्रशिक्षण विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थाओं में चल रहा है। इससे हिंदी का वर्चस्व दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। किसी भी देश को समझने के लिए उस देश की भाषा व संस्कृति के प्रति रूचि आवश्यक होता है। प्राचीन काल से ही भारत अपनी कला, विज्ञान, साहित्य व संस्कृति में सम्पन्न होने के कारण सम्पूर्ण विश्व के लिए जिज्ञासा का केन्द्र रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत को जानने एवं समझने के लिए विदेशियों की रुचि में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और इसके लिए उन्होंने भारतीय भाषाओं व साहित्य को माध्यम बनाया है। विदेशी विश्वविद्यालयों में 'इंडोलोजी' विभाग की स्थापना इस बात का द्योतक है कि भारत को समझने के लिए यहाँ की भाषा एवं संस्कृति को जानना की ज़रूरी है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हिन्दी संसार की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। सबसे अधिक बोली व व्यवहार में आने वाली भाषा चीनी है, दूसरे स्थान पर अंग्रेजी और तीसरे स्थान पर हिन्दी है। पिछले 50 साल में हिंदी भाषी 26 करोड़ से बढ़कर 42 करोड़ हो गए जबकि अंग्रेज़ी बोलने वालों की संख्या 33 करोड़ से बढ़कर 49 करोड़ हो गई. इस तरह हिंदी की वृद्धि दर अंग्रेज़ी से ज़्यादा है। इसमें मातृभाषा के रूप में हिंदी प्रयोग करने वाले भारतीयों का प्रतिशत 45 है। द्वितीय भाषा व संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करने वाले भारतीयों की संख्या भी इसमें जोड़ दी जाए तो यह प्रतिशत बहुत बढ़ जाता है। भारत के पूर्व में रहने वाला, पश्चिम में बसे भारतीय से सम्पर्क केवल हिन्दी के माध्यम से ही कर सकता है। यह शक्ति, सम्पर्क भाषा कही जाने वाली अंग्रेजी में भी नहीं है। अंग्रेजी देश की जनसंख्या की एक प्रतिशत से भी कम लोगों की मातृभाषा है। विगत डेढ़ दशक में हिन्दी भाषा के भूगोल और स्वरूप में जो परिवर्तन हुए हैं, वह हिन्दी भाषा और भूमंडलीकरण के सशक्त पारस्परिक सम्बन्ध को व्यक्त करता है।

आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हिन्दी के महत्व को समझते हुए अपने विज्ञापन में हिन्दी का प्रयोग करने लगी हैं, यहां तक 'कंटेंट राइटर' और 'लैंग्वेज एक्सपर्ट' जैसे पद पर नियुक्ति के लिए हिन्दी तथा किसी एक अन्य भारतीय भाषा का ज्ञान अंग्रेजी की तुलना में अत्यावश्यक मानती हैं। विज्ञापन एजेंसियों में सारे विज्ञापन पहले अंग्रेजी में बनते थे लेकिन अब हिंदी में विज्ञापन लेखन के लिए 'हिंदी एक्सपर्ट' रखकर हिंदी में विज्ञापन लेखन कार्य किया जाने लगा है। अब हिन्दी बिना किसी संकोच के धड़ल्ले से अंग्रेजी भाषा के शब्दों को आत्मसात् कर रही है। हिन्दी व अंग्रेजी का सम्बन्ध अब सह-अस्तित्व का है। हिन्दी का भविष्य अब संगोष्ठियों, विश्वविद्यालयों और अकादमियों में तय नहीं हो रहा है, अपितु अब खुले बाजार में मुक्त स्पर्धा से तय हो रहा है। हिन्दी ने यह सिद्ध कर दिया है कि उपभोक्तावाद, बाजारवाद और उदारीकरण की व्यवस्था के अनुरूप अपने आप को ढालने की उसकी क्षमता विलक्षण है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपना माल और उत्पाद तो हिन्दी-क्षेत्र में ही विक्रय करना चाहती है, क्योंकि उसे पता है कि यह उतना बड़ा बाजार है जो यूरोप, अमरीका और फ्रांस को मिलाकर भी नहीं बनता। हिन्दी भाषियों का क्षेत्र 50-60 करोड़ जनता का है। देश की राजनीतिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र यही है। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने हिन्दी भाषा को राजनीतिक और सांस्कृतिक संवाद तक सीमित न करके उसे बाजार की उपभोक्ता संस्कृति की नई भाषा के अनुरूप ढाल दिया। सभी उपभोक्ता वस्तुओं के विज्ञापन में हिन्दी को महत्व दिया जाता है क्योंकि हिन्दी का विज्ञापन अधिक लोगों तक पहुंचता है। स्पष्ट है कि भूमंडलीकृत सूचनातन्त्रों, उपभोक्तावाद, बाजारवाद आदि ने हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप व भूमंडलीय पहचान प्रदान की है। हिन्दी के विकास और संवर्धन में इलेक्ट्रानिक मीडिया, टीवी चैनलों आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। जो कार्य हिन्दी फिल्में छह दशक में भी नहीं कर सकीं वह कार्य टेलीविजन ने एक दशक में कर दिखाया। घरों में, दुकानों पर, ढाबों, चाय की दुकानों पर, पनवाड़ी के खोखे और झुग्गी-झोपडियों में प्रत्येक ओर टेलीविजन विराजमान हो गया। टेलीविजन एक ही समय में एक जैसी सूचना को सार्वजनिक और वैश्विक बनाने की क्षमता रखता है और उसने इसी विशेषता के कारण विश्व को वैश्विक गाँव में बदलकर रख दिया है।

वैश्विक हिन्दी परिनिष्ठित, परिमार्जित और शुद्ध हिन्दी नहीं है, उसमें बहुत कुछ अंग्रेजी मिली हुई है। एक नई हिन्दी का सृजन हो रहा है। हिन्दी भाषी बाजार की यह स्पर्धात्मकता उसे वैश्विक व्यवहार और विचार की भाषा बना रही है। हालांकि यह भी ध्यान में रखना है कि विश्व बाज़ार की स्थितियों में यह भाषा कहीं केवल माल बेचने की भाषा न बन जाए।

हिंदी फिल्मों में ये सब खूब हो रहा है। ये फ़िल्में बाज़ार की ताकतों के दबाव में बनती हैं, जिसका उद्देश्य अधिक से अधिक पैसा कमाने का लालच रहता है। इससे भाषा और संस्कृति के नष्ट होने की प्रबल संभावना होती है। इसके बावजूद हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता में कमी नहीं आई है। समस्त भारतीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों के यदि वार्षिक आंकड़े देखें जाएं तो सभी भारतीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों की कुल संख्या हिन्दी फिल्मों की तुलना में बहुत कम ही होती है। अन्य भाषाओं के कलाकार हिन्दी फिल्मों में इसीलिए आना चाहते हैं जिससे उन्हें बड़ा दर्शक वर्ग मिल सके। इधर तमिल, तेलगु, मलयालम आदि में बनने वाली फ़िल्में या तो हिंदी में डब की जाती हैं या उसका रीमेक होता है। बाहुबली, पुष्पा, आर.आर.आर., केजीएफ, कंतारा, विक्रम आदि फ़िल्में इस बात के प्रमाण हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी हिन्दी में प्रकाशित दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्र-पत्रिकाओं की संख्या अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में बहुत अधिक है। इसी व्यापकता के कारण ही आज भी हिन्दी देश की मुख्य भाषा बनी हुई है। भारत के बाहर फीजी, मारिशस, सूरिनाम, त्रिनिदाद व दक्षिण अफ्रीका में बसे लाखों प्रवासी भारतीय विगत 150 वर्षों से मातृभाषा के रूप में हिन्दी का व्यवहार करते हैं। ये प्रवासी भारतीय मूलतः पश्चिमी बिहार व पूर्वी उत्तर प्रदेश से इन देशों में पहुंचे थे। इनकी भाषा भोजपुरी व अवधी थी, इसलिए इनके मध्य सम्पर्क का माध्यम ये ही भाषाएं बनीं। कालान्तर में यही हिन्दी इनकी अस्मिता का प्रतीक बन गईं। ये प्रवासी भारतीय हिन्दी का व्यवहार करते हैं, उसका सम्मान करते हैं और हिन्दी का प्रचार-प्रसार चाहते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि हिन्दी समस्त भारतीयों को एक दूसरे से जोड़े रखने का महत्वपूर्ण सांस्कृतिक माध्यम है। हिन्दी इन देशों में मात्र भारतीयों के मध्य ही नहीं, अपितु यहां के मूल निवासियों के मध्य भी अच्छी तरह समझी व बोली जाती है। फीजी में तो हिन्दी को तो संवैधानिक संसदीय मान्यता प्राप्त है।

दक्षिण एशियाई देशों जैसे-श्रीलंका, पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश, भूटान व बर्मा आदि देशों में हिन्दी भाषा बोलने व समझने वालों की संख्या पर्याप्त है। केवल श्रीलंका के ही 300 विद्यालयों और 9 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एवं साहित्य शिक्षण एवं प्रशिक्षण का चल रहा है। पाकिस्तान की राजभाषा भले ही उर्दू हो लेकिन हिंदी बोलने और पढ़ने वालों की संख्या पर्याप्त है। नेपाल की जनसंख्या का लगभग 0.47% लोग हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानते हैं। नेपाल के तराई इलाकों में रहने वाले अधिकांश लोग हिंदी बोल और समझ सकते हैं। इसका एक मुख्य कारण भारतीय टेलिविज़न और सिनेमा की नेपाल में लोकप्रियता है।

इनके अतिरिक्त भारतीय मूल के लोग अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया या अफ्रीका चाहे कहीं भी बसे हों हिन्दी बोलते और समझते हैं। मूलतः हिन्दी विदेशों में बसे भारतीयों के मध्य सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जाती है। प्रवासी भारतीयों की पहली व दूसरी पीढ़ी में हिन्दी मातृभाषा एवं तीसरी व चौथी पीढ़ी के बाद दूसरी भाषा बन जाती है। प्रवासी भारतीय हिन्दी को उन देशों में भी सुरक्षित रखने के लिए प्रयासरत हैं। यहां भारतीय विद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है, हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है, रेडियो पर दीर्घ अवधि के हिन्दी प्रसारण होते हैं और इतना ही नहीं हिन्दी में मौलिक साहित्य का सृजन भी करते हैं।

भाषा की सामाजिक प्रतिष्ठा उसके बोलने वालों की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है। प्रवासी भारतीयों का बड़ा दल सर्वप्रथम मारिशस में 1834ई. में गया था, फिर 1845ई. में त्रिनिनाद, 1860ई. में दक्षिण अफ्रीका, 1870ई. में गुयाना, 1873ई. में सूरिनाम एवं 1879ई. में फीजी गया था। यहां जाने वाले भारतीय अवधी, भोजपुरी व कुछ खड़ी बोली का प्रयोग करते थे। धीरे-धीरे इनकी यह भाषा एक नए रूप में नई शैली में विकसित हो गई। इनके अनेक नाम रखे गए, जैसे सूरिनाम की हिन्दी को सरनामी कहा जाता है। दक्षिण अफ्रीका में इसे नैताली कहा जाता है। इनका प्रयोग प्रवासी भारतीय घर में तथा औपचारिक बातचीत में करते हैं। प्रवासी भारतीयों के निकट आने के लिए विदेशी विद्वानों ने हिन्दी की शैलियों पर विभिन्न दृष्टियों से कार्य किया और इनका व्याकरण बनाया, हिन्दी-अंग्रेजी द्विभाषी कोश तैयार किए। रोडने मोग का फीजी हिन्दी का व्याकरण, सूजा हील्स का फीजी हिंदी-अंग्रेजी-फीजी हिन्दी कोश इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास हैं। हिन्दी भाषा के अध्ययन और व्याकरण लेखन की परम्परा विदेश में सत्रहवीं शती के अंतिम दशक में प्रारम्भ हो गई थी। हिन्दी भाषा का पहला व्याकरण जान जोशुआ केटलेर का लिखा हुआ है। यह पुस्तक डच में थी तथा 1695ई. के आसपास लिखी गई थी।

जान केटलेर डच भाषी थे और व्यापर के लिए सूरत शहर में आए। इन्हें व्यापर के लिए सूरत से दिल्ली, आगरा और लाहौर आना पड़ता था। भारत आने के बाद इन्होंने हिंदी सीखी तथा अपने देश के लोगों के लिए डच भाषा में हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण लिखा। विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विदेशी शोधार्थियों द्वारा अनेक शोध हो रहे हैं जोकि हिन्दी के भाषा तथा साहित्य दोनों पक्षों पर हो रहे हैं। फीजी के कमला प्रसाद मिश्र, मारिशस के अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर एवं महेश रामजियावन, सूरिनाम के मुंशी रहमान खान, सूर्य प्रसाद वीरे के साहित्यिक अवदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

अंग्रेज कवि चैम्बर लेन ने हिन्दी में अनेक गीत लिखे, जूलियस फ्रेडरिक उलभन ने हिन्दी में 'वह श्रेष्ठ मूलक था' लिखा तो ओदोलेन स्मेकल 'मेरी प्रीत तेरे गीत' आदि कितने ही ग्रन्थ हिन्दी में प्रकाशित हुए।

अपनी भाषा में अभिव्यक्ति व उसके व्यापक प्रचार-प्रसार की इच्छा ने विदेशी हिन्दी प्रेमियों को पत्रकारिता की ओर तत्पर किया। आज विदेशों में कई हिन्दी पत्र निकल रहे हैं जो बड़ी संख्या में छपते हैं जिनमें प्रवासी भारतीय लेख, कविता तथा कहानियां आदि लिखते हैं। फीजी टाइम्स द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक शांतिदूत एक ऐसा पत्र है जो विगत 70वर्ष से निकल रहा है। विदेशों में भारत के प्रति विद्वानों की बढ़ती रुचि ने विदेशियों को भारतीय साहित्य और विशेषकर हिन्दी साहित्य के अनुवाद की ओर प्रेरित किया। हिन्दी साहित्य का विश्व की अनेक भाषाओं में निरन्तर अनुवाद हो रहा है। प्रेमचंद के गोदान का विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हुआ। वैश्विक स्तर पर देखा जाये तो हिन्दी आज विश्व की एक प्रतिष्ठित भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है और अपने संख्या बल के आधार पर विश्व की तीसरी प्रमुख भाषा है और विश्व के किसी भी देश में बसे हुए प्रवासी भारतीय हिन्दी को अपनी अस्मिता का प्रतीक मानते हैं। हाल-फ़िलहाल में हिन्दी साहित्य के अध्ययन व अनुवाद के प्रति भी विदेशियों की रुचि बढ़ी है। सूचना-उद्योग हिन्दी का नए और सृजनात्मक ढंग से प्रभावशाली उपयोग कर रहा है जिसमें विकास की अनन्त संभावनाएं विद्यमान हैं। साहित्य, ज्योतिष, स्वास्थ्य, खेल, मनोरंजन, व्यंजन, योग, धर्म, अध्यात्म, फैशन आदि विविध विषय हिन्दी की बेबसाइटों पर सहज और सदैव सुलभ हैं। इस सारे परिदृश्य में हिन्दी का न केवल वैश्विक प्रसार हुआ है अपितु हिन्दी का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व में तेजी से बढ़ने लगा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी के लिए अनंत सृजनशील एवं उज्जवल संभावनाएं हैं।

लेखक कैसे बने : रस्किन बॉन्ड

डॉ. जगदीश सौरभ

सहायक आचार्य,हिंदी विभाग

एक बड़े शहर में एक मशहूर लेखक ने वर्कशॉप आयोजित की। अपनी विश्वसनीयता के मुताबिक महँगी फीस के साथ। जब सभागार लोगों से लबालब भर गया, लेखक ने सबसे एक बड़ा ही सामान्य प्रश्न पूछा- "आप में से कौन कौन एक बढ़िया लेखक बनना चाहता है ?" सभी ने बेझिझक हाथ उठाया। सभी को बढ़िया लेखक जो बनना था। लेखक ने कहा- "तो फिर आप सब यहाँ क्या कर रहे हैं? जाइए और लिखिए।" रस्किन बॉन्ड की किताब 'लेखक कैसे बनें' कुल मिलाकर यही संदेश देती है। चूंकि किताब किशोर वय को ध्यान में रखकर लिखी गयी है, इसलिए इस एक संदेश को छोटे छोटे भागों में बाँट दिया गया है। बहुत ही मनोरंजक तरीके से।

सबसे पहले बॉन्ड शुरुआत करते हुये यह बताते हैं कि मैं क्यों लिखता हूँ।

वे लिखते हैं क्योंकि उन्हें लिखना बेहद पसंद है। इस बात मे ही वह राज़ छुपा है जो आपको कुछ बेहतर बना सकता है।

आप वही काम ढंग से कर सकते हैं, जो आप ढंग से कर सकते हैं। यानि जो आपको भीतर से आनंदित करता है। वह काम जो आपको थकाता नहीं, जो समय को शून्य कर देता है। जिसे करके आप सार्थक महसूस करते हैं। बॉन्ड खुद कहते हैं कि "लिखना, मेरे लिए, दुनिया का सबसे सहज और महानतम आनंद है। मेरे लिए जीवन असहनीय हो जाये अगर मेरे पास रोज़ लिखने की यह आज़ादी न हो। और सतही पेशेवर लेखकों की तरह मैं सबको खुश करने के लिए नहीं, बल्कि वास्तव में मैं स्वयं को खुश करने के लिए लिखता हूँ।

अपने काम को लेकर बहुत कम ऐसे खुशकिस्मत लोग होते हैं जो यह कह सकें कि "मैं इस बात को लेकर निश्चय ही गंभीर था कि लेखन मेरे जीवन का मुख्य व्यवसाय होगा।

" बॉन्ड की परवरिश एक समृद्ध और सुसंस्कृत परिवार में हुई है, जैसा कि उनकी कहानियाँ और संस्मरण बताते हैं। उनके जीवन में विविध लोगों और यात्राओं की रोमांचकता का खूब योगदान रहा है। लेकिन बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। इससे यह साबित नहीं होता कि ऐसी परिस्थितियों में पला बढ़ा हर व्यक्ति अपने जीवन में बहुत उल्लेखनीय काम ही करेगा। ज़्यादातर यही तो होता है कि अमीर लोग और ज़्यादा अमीर बनने का ख्वाब देखते हैं। बॉन्ड ने लेखक बनना खूब सोच समझ कर चुना था। आप भी चुन सकते हैं।

वैसे तो जीवन में हर काम को करने का सबसे बेहतर तरीका है उसे पूरे होश में करना। जो भी आप कर रहे हों , फिर वह चाहे खाना या पानी पीने जैसा साधारण काम ही क्यों न हो। उसे बिलकुल होश में कीजिये। यानि एक समय में एक ही काम। लेखन के लिए यह तकनीकी बहुत फायदेमंद है। इस सजगता से आपमें चीजों को देखने की एक दृष्टि पैदा होती है। लेखन के लिए सबसे ज़रूरी है, लिखते रहना, शब्दों की सुंदरता और उनके संयोजन को गौर से देखते रहना, सुनते रहना और उनपर ध्यान देते रहना।

दुनिया में हर काम किसी न किसी समय एक ऊब पैदा करता ही है। भीतर से एक सवाल उठता है कि आखिर इसे हम क्यों कर रहे हैं। ऐसे में किसी सस्ते भावनात्मक वाक्य से ऊर्जा मत ग्रहण कीजिये। कुछ समय के लिए अपने काम से छुट्टी ले लीजिये और उसके औचित्य पर विचार कीजिये। कोइ काम करते हुये नहीं, बल्कि उसे स्थगित करके ही उसके औचित्य पर विचार किया जा सकता है। बहुत क्रियाशील मस्तिष्क सही निर्णय नहीं ले सकता। अच्छे निर्णय, भाव या विचार आपके मस्तिष्क में तब प्रवेश करते हैं जब आप बिलकुल शांत होते हैं। अगर आप लिखते हैं तो यह बात गौर करने लायक है। आपकी धारा धीमी या मटमैली हो जाये तो जो आप लिख रहे हैं, उसे एक तरफ रख दें। लिखने की मेज पर अधिक समय बिताने से शब्द अपनी ताज़गी खो देते हैं। कोई भी काम अगर ज़बरदस्ती किया गया है तो उसके पोर पोर से नीरसता झाँकेगी ही।

लिखना एक समग्रता भरा काम है। यह जीवन से बहुत गहराई तक जुड़ा है। यह महज़ आजीविका कमाने जैसा नहीं है कि, किया और घर चले आए। कला की उच्चता का पैमाना जीवन ही है, और कुछ नहीं। आपका बातें करना, भोजन करना, यात्राएं करना या फिर आजीविका कमाना, आपके जीवन को प्रतिबिम्बित करता है। यह सब साधारण तरीके से किया जा सकता है और कलात्मक तरीके से भी। मसलन जिसको भोजन से प्रेम नहीं है, जो स्वाद की अनुभूति को बहुत गहराई से नहीं महसूस कर सकता, वह जीवन से प्रेम कैसे कर सकता है। कला से संबन्धित हर काम जीवन पर गहरी पकड़ की मांग करता है। बॉन्ड कहते हैं “एक कलाकार को जीवन पर अपनी पकड़ नहीं खोनी चाहिए। जब हम एक आरामदायक वृद्धावस्था चुनते हैं, हम उस पकड़ को खो देते हैं।“ कला के लिए, फिर वह चाहे जो भी हो, आपको कुछ जोखिम उठाने पड़ते हैं। एक अतिसुरक्षापूर्ण जीवन आपकी रचनात्मकता को कुंद बना देता है।

आपकी उम्र जो भी हो, अगर आप जीवन के अंतिम समय तक की आर्थिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा को लेकर बहुत सचेत हैं तो आप एक अच्छे कलाकार नहीं बन सकते। बॉन्ड यह जोड़ना नहीं भूलते कि “एक व्यक्ति की आंतरिक शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि वैसे अम्लान सौंदर्य को किस तरह अपने भीतर समेटे रहता है। जीवन में ब्याज दरों, लाभांशों, बाज़ारी ताकतों और असीमित प्रौद्योगिकी के अलावा बहुत कुछ है।

लेखक बनने के लिए मौन का और एकांत का होना ज़रूरी है। ध्यान रहे कि यह मौन या एकांत थोपा हुआ नहीं, बल्कि सहज चुनाव होना चाहिए। मौन सिर्फ बाहर की दुनिया में नहीं, अपितु भीतर भी। जब आप शांत और मौन होते हैं तो अनुभूतियों को ज्यों का त्यों अपने भीतर उतरने देते हैं। लिखने के लिए इन सहज, स्वच्छ और निर्मल अनुभूतियों का होना ज़रूरी है। आप जो भी लिखना चाहते हैं, उसके बारे में ज़्यादा चर्चा मत कीजिये। मैं स्वयं बहुत दिनों से डायरी लिखता रहा हूँ। कोरोना काल में बिलकुल खाली होने पर मेरा लिखना बहुत ज़्यादा हो गया था। समस्या यह थी कि मैं कहानियाँ और कवितायें लिखना चाहता था, लेकिन कुछ दिनों तक उससे संबन्धित कोई विचार मेरे मस्तिष्क में कौंध ही नहीं रहा था। अपनी यह समस्या मैंने एक वरिष्ठ लेखक को बताई। उन्होने बताया कि आप जो भी करते हैं, जो भी लिखते हैं, वह आपकी जीवन ऊर्जा से ही शक्ति खींचती है। अगर सोचे हुये को बहुत विस्तार से बोला या लिखा जाये तो वह घनीभूत होकर कविता या कहानी में नहीं उतर सकता। इसीलिए कहा जाता है कि सवाल हो, कहानी हो या फिर कविता, भीतर भीतर धीमी आंच में उसे पकने देना चाहिए।

बॉन्ड एक भरे पूरे परिवार में रहते हैं। वे कहते हैं कि “परिवार से, लोगों से प्रेम होना ज़रूरी है लेकिन चिंतन मनन के लिए अकेलापन होना भी ज़रूरी है।“ अकेलापन से तात्पर्य महज़ शारीरिक रूप से अकेले होने से नहीं है। शारीरिक रूप से अकेले होना एक विलासिता भी होती है जो हर किसी को हासिल नहीं होती। यह एक पूर्वाग्रह भी हो सकता है। साथ ही आपके कलात्मक जीवन के लिए नुकसानदेह भी। दरअसल हम क्या हैं, कैसे हैं, यह हमारे पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों से परिभाषित होता है। इन सम्बन्धों के बिना आपका अस्तित्व तभी कायम हो सकता है जब आप किसी दूसरे ग्रह के निवासी हों। समस्या यह है कि दूसरे ग्रह के निवासी होने पर आप लिखेंगे किसके बारे में ? और उससे भी महत्वपूर्ण सवाल है कि आपके लिखे को पढ़ेगा कौन ? इसलिए सामाजिक संबंध कलाकार के लिए अभिशाप नहीं, वरदान हैं। आपको बस अपना एकांत गढ़ना पड़ता है। भीड़ में होकर भी अकेले होना एक कला है, अन्य कलाओं की तरह। लेखन वह काम है जो वैसे भी हमें नितांत अकेला कर जाता है। अधिकांश समय आप अकेले होते हैं। आप अकेले ही काम करते हैं।

लेखक बनने के लिए आपके पास जीवनबोध का होना ज़रूरी है। इस जीवन बोध में सुख भी है दुख भी। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक को नकार कर दूसरे को नहीं पाया जा सकता। इसलिए छोटी छोटी बातों में खुश रहने की कला विकसित करना लेखक की सबसे बड़ी काबिलियत मानी जाती है। बॉन्ड कहते हैं “खुश रहना स्वभाव पर निर्भर करता है न कि परिस्थितियों पर।

हम दुख, दर्द और त्रासदी को रोक नहीं सकते। फिर भी, अपने आस पास देखने पर हम पाते हैं कि अधिकतर लोग सच में जीवन का आनंद उठा रहे हैं।

बॉन्ड कहते हैं "लेखक कोई भी बन सकता है लेकिन अच्छा लेखक हर कोई नहीं बन सकता।" यह बहुत महत्वपूर्ण बार है। और इसके लिए हमें यह तय करना होगा कि हम "क्यों लिखें ? सच में आखिर क्यों ?" प्रसिद्धि के लिए ? शक्ति और प्रभाव के लिए ? पैसे के लिए ? या फिर खुशी के लिए ? इन तीन चार सवालों के जवाब ही आपके लेखन के औचित्य को सिद्ध करेंगे। शक्ति, प्रसिद्धि और पैसे के लिए भी लिखा जा सकता है। लेकिन इस लिखने में एक तनाव होगा। अगर हमारी कल्पना के अनुरूप चीज़ें नहीं हुईं तो प्रत्येक कदम पर आपको निरर्थकता का बोध होगा। निरर्थकता का यह बोध आपके लेखन में दिखाई देगा। और अगर इन चीजों के लिए हम लिखते हैं तो यह भी समझ लें कि इन चीजों की कोई सीमा नहीं है। आपके सामने सदैव आपसे ज़्यादा धनी, प्रसिद्ध और आपसे ज़्यादा लोकप्रिय लेखक मौजूद रहेगा। जब हम किसी ओछी चीज़ को अपना प्राप्य बनाते हैं तो हमारा जीवन एक प्रतिक्रिया बन कर रह जाता है। हमारी आंतरिक क्षमता अपने सम्पूर्ण सौंदर्य के साथ खिल नहीं पाती। वहीं, जब हम कोई काम स्वांतः सुखाय करते हैं तो वह अपनी पूरी प्रज्ञा और असाधारणता के साथ निखर कर सामने आती है। जब हम कोई काम पूरे समर्पण के साथ करते हैं तो प्रसिद्धि, पैसा और लोकप्रियता सहउत्पाद यानि 'बाईप्रोडक्ट' के रूप में हमारे खाते में आ ही जाती है। इसलिए कोई काम प्रसिद्धि के लिएनहीं, सिद्धि के लिए करें।

बॉन्ड इस पर भी बात करते हैं कि "लेखक बनने की तैयारी कैसी होनी चाहिए।" ध्यान रहे कि लेखन एक 'पार्ट-टाइम जॉब' नहीं है। व्यक्ति का सोना-जागना सब इस दायरे में आता है। हमारी बातें, हमारा व्यवहार, हमारी समूची ऐंद्रिक अनुभूति, यहाँ तक कि हमारे सपने भी। इनसे अलग कला का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। हमारा अपना जीवन ही इन सब चीजों का आधार बन सकता है। उधार का जीवन नहीं। लिखने के लिए आपको अतिरिक्त सचेत नहीं होना पड़ता, बस सहज तरीके से सचेत होना काफी है। जिसमें आपका चेतन और अचेतन दोनों मन सहज रूप से भागीदार हो। वही लिखें, जो आप लिख सकते हैं। जिन जगहों के बारे में आप लिख रहे हों, उन्हें आप सच में जानते हों। अगर फंतासी भी लिख रहे हों तो वह अपने देश और संस्कृति और भाषा पर आधारित होनी चाहिए। इससे प्रामाणिकता आती है। लिखने का विषय चुनने में भी यही बोध होना चाहिए। जर्मन कवि राइनर मारिया रिल्के अपने पत्रों में एक नवोदित लेखक को समझाते हुये कहता है लिखने को अगर कुछ नहीं मिल रहा है, तो अपने बचपन की तरफ मुड़ जाइए। वहाँ कुछ न कुछ अवश्य होगा। और सबसे ज़्यादा प्रामाणिक।

फिर आपको किसी से यह नहीं पूछना पड़ेगा कि मैंने कैसा लिखा है। बॉन्ड कहते हैं कि लिखने की तैयारी के लिए आपके पास नोटबुक होनी चाहिए। हर वक्त। खयाल किसी भी वक्त आते ही होंगे, बस आपको जागरूक रहना होगा। यहाँ तक कि आप अपने सपनों को भी कहानियों में बदल सकते हैं।

इस किताब का एक हिस्सा इस बात पर है कि "पाठकों को अपनी भाषा से चमत्कृत करने की कोशिश मत कीजिये। लंबे और घुमावदार वाक्य पाठकों की रुचि कम करते हैं।" अपने शुरुआती लेखन में हम सभी का मुख्य उद्देश्य दूसरों को प्रभावित करना होता है। अपनी सतही रचनाएँ लेकर दूसरों के पीछे भागना आपको याद है ? त्वरित अनुमोदन की यह अधीरता एक लंबे समय में कम होती है, जब आपको अपने लिखे पर भरोसा होने लगता है। भाषा के संदर्भ में भी यही होता है कि हम हमेशा ओजपूर्ण शब्दों, लंबे वाक्य विन्यास, चमत्कृत कर देने वाली भाषा और अलंकारपूर्ण शैली को अपनाते हैं। यह आपकी भीतरी बेचैनी और अस्तव्यस्तता को ही दर्शाता है। लेकिन सवाल यह है कि कोई आपको क्यों पढ़ेगा। मैंने अक्सर काव्य पाठ कर रहे निरीह कवियों को देखा है। वे एक ही कविता में विविध प्रकार के बिम्ब इस तरह ठूँस कर आपके सामने खड़े होते हैं कि अब कोई चमत्कार होने ही वाला है। लेकिन अंदर की बात यह है कि अगर आपको अपना ही लेखन अंदर से सहज नहीं बनाता, गुदगुदाता नहीं तो आप दूसरों से उसके अनुमोदन की उम्मीद कैसे कर सकते हैं। जो बात आपने समझी नहीं, वह दूसरों को समझाने की जल्दी ही क्या है ? इसलिए वही लिखिए जो दिल से निकले, आपको अच्छा लगे। सबके पास लिखने के लिए कुछ न कुछ होता है। कोई भी इस वरदान से रिक्त नहीं है। बस अपनी शैली और अपना स्वर खोजिए। जो चीज़ आपको अच्छी लगेगी दूसरों को अच्छा लगने से कोई ताकत उसे नहीं रोक सकती।

लिखना कृत्रिम और मशीनीकृत नहीं होना चाहिए। अगर लिखने में सजीवता और तरलता नहीं है तो वह मुर्दा लेखन होगा। एक दिन आप अपने लिखे से ही ऊब जाएंगे। और बॉन्ड कहते हैं "वह लेखक जो अपने लिखे से स्वयं ही ऊब जाये, बतौर लेखक उसका काम तमाम है।" यह लेखन ही नहीं, जीवन के बहुविध क्षेत्रों में ध्यातव्य है। शारीरिक जरूरतों के अलावा हर मनोवैज्ञानिक चीज़, जो औचित्य पूर्ण न हो, बहुत जल्दी ऊब पैदा कर देती है। लिखने के लिए प्रेरणा का स्रोत अगर आपके भीतर नहीं होगा, तो बाहरी प्रेरणाएं आपको सिर्फ भ्रमित करेंगीं। इसलिए किसी काम को करने की जल्दी की बजाय, इस पर थोड़ा समय निवेश करना चाहिए कि यह मुझे क्यों करना है। सम्यक सोच ही सम्यक कर्म की तरफ ले जाती है। नहीं तो वह आधा अधूरा ही होगा। और बॉन्ड के मुताबिक "आधा किया, न किए के बराबर है।

“ बिहारी का वह दोहा तो आपने पढ़ा ही होगा ‘अनबूड़े बूड़े, तिरे, जे बूड़े सब अंग।‘ यानि आधा अधूरा डूबने वाले डूब जाते हैं। जो पूरा डूबते हैं वह पार हो जाते हैं। वे तिर जाते हैं, वे तर जाते हैं।

सही कामों के लिए एक और बात जानने योग्य है। आपको क्या करना चाहिए, इससे ज़्यादा महत्व इस बात का है कि आपको क्या नहीं करना चाहिए। अगर आपको अपना लिखा हुआ पसंद नहीं आ रहा, भीतर से खुशी नहीं दे रहा तो आपके लिए बॉन्ड की एक सलाह है। “रद्दी टोकरी की ईजाद ज़रूर निराश लेखकों ने की होगी।“ इज़राईल के मशहूर लेखक युवाल नोवा हरारी कहते हैं कि “मेरे संपादकों का आभार जिन्होने मुझे बताया कि कुंजीपटल यानि की-बोर्ड की डिलीट बटन किसी भी अन्य बटन से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है।“ एक और बात कि छपास की महत्वाक़ांक्षा न लें। अगर आप अच्छे लेखक हैं तो आज नहीं कल ज़रूर छपेंगे। लिखने में ऊर्जा व्यय कीजिये, छपने में नहीं। सबसे अंत में रस्किन बॉन्ड की यह सलाह याद रखी जानी चाहिए कि “पढ़ना, लिखना और पढ़ा जाना सबसे बढ़िया संयोग है।“ इसमें संयोग शब्द पर ज़्यादा ध्यान दिये जाने की जरूरत है। इस एक बात में निष्काम कर्म, अनासक्त योग, साक्षी भाव और निस्संगता का मर्म समाया हुआ है। यह भी कि हमें बेहतर से बेहतर करना चाहिए, और बदतर के लिए तैयार भी रहना चाहिए। लेखन जीवन के तमाम कार्यों में से एक काम है। बढ़िया और आनंददायक काम है। अगर थोड़ा जोख़िम उठा सकें, अधीरता को एक तरफ हटा सकें, जीवन रस में तल्लीनता से डूबने के लिए थोड़े समय का निवेश करसकें तो इससे बेहतर कुछ और नहीं हो सकता। दुनिया में कम ही ऐसे काम होते हैं जो जीवन के साथ एकमेव हो सकते हैं।

लेखन उनमें से एक है।

इति।

मातृभाषा को अपनाकर होगा देश का विकास

डॉ. अमृत कुल्लू
सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग,

आज देश सबका साथ, विकास, विश्वास और प्रयास के मूलमंत्र को अपनाकर विकास की राह पर चल रहा है। लेकिन सफलता को पाने के लिए विकास के इन सभी स्तंभों में भारतीयता का होना अनिवार्य है, और भारतीयता मातृभाषा को अपनाकर प्राप्त किया जा सकता है।

किसी भी देश का वास्तविक विकास उसके पारिस्थितिकी तंत्र के अंतर्गत विकसित हुई संस्कृति को अपनाकर किया जा सकता है. जब हम संस्कृति कि बात करते हैं तो भारतीय संस्कृति को हम सांझी संस्कृति के रूप में पाते हैं। प्राचीन काल से ही भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रानुसार मातृभाषा विद्यमान है। मातृभाषा को प्रमुखता देने के कारण ही इतिहास में देश के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान तथा महत्ता थी। परिणामतःसम्पूर्ण देश आत्मनिर्भर था।

जब भी देश के विकास की बात होती है तब यह कहा जाता है कि सबका साथ लेकर ही देश का विकास हो सकता है। सबका साथ अर्थात देश के विभिन्न जाति, धर्म, समुदाय, राजनितिक एवं भौगोलिक क्षेत्रों की विविधता में एकता रखते हुए विकास करना। कभी कभी विविधता को जल्दबाजी में की राह में रोड़ा मान लिया जाता है लेकिन ऐसा नहीं है, वास्तव में विविधता ही हमारे देश की मजबूती है। और विविधता में एकता बनाने में मातृभाषा की महती भूमिका है।

स्वतंत्र चिंतन के माध्यम से ही मनुष्य विकास से सम्बंधित अपनी समझ को विकसित कर पाने में सक्षम हो सकता है। बिना मातृभाषा के स्वतंत्र रूप से चिंतन नहीं किया ज़ा सकता। प्राचीन काल में भारत के विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न बोलियाँ एवं भाषाएँ मातृभाषा के तौर पर विद्यमान थी, अतः प्रान्त का प्रत्येक निवासी प्रान्त के विकास से सम्बंधित विवेक रखता था। परिणाम यह होता था कि सभी के सम्मिलित प्रयासों से प्रान्त का विकास होता था। उस समय राजा और प्रजा की भाषा एक होती थी तथा सभी कार्य मातृभाषा में ही होते थे। राज्य अथवा समाज के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा मातृभाषा के कारण सभी जन एक दुसरे से संवाद कर लेते थे।

अतःऐसा विकास सम्बंधित क्षेत्र को विशिष्टता प्राप्त करवाता था. जब एक प्रान्त दुसरे प्रान्त को युद्धय में पराजित कर बड़े साम्राज्यों के निर्माण करने लगे तब शासक और आमजन की भाषा अलग अलग होने लगी

लोगों को अपनी बातों को शासक के समक्ष रखने के लिए अलग भाषा का प्रयोग करना पड़ता था. ऐसे में राज्य में एकता का लोप होने के साथ साथ विकास संबंधी योजनाओं के निर्माण में आमजनों के विचारों की भूमिका भी खत्म होने लगी। भारतीय इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ शासकों ने भारत देश की भाषा को न अपनाकर अपने मातृदेश की भाषा को यहाँ प्रयोग में लाया। अरबी, फारसी और अंग्रेजी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। मातृभाषा को शासकों के द्वारा सम्मान न दिए जाने के कारण तथा रोजगार प्रदान करने में भी विदेशी भाषाओँ को प्राथमिकता देने के कारण मौलिक चिंतन में आभाव आने लगा. जिस देश से सम्पूर्ण विश्व शिक्षा ग्रहण करना था वह देश अब पिछलग्गू बनने लगा. वास्तव में विदेशी शासक खासकर अंग्रेजों ने यह जान लिया था कि भारत में विविधता के बावजूद भी सबका साथ, विकास, विश्वास एवं प्रयास की भावना का मूल कारण मातृभाषा में शिक्षण तथा चिंतन है। मातृभाषा के कारण जनता का अपने समाज तथा देश से जुडाव काफी मजबूत है। अतः उन्होंने मैकाले शिक्षा निति को लाकर देश की शिक्षा व्यवस्था को पाश्चात्य देशों का अनुसरण करने पर मजबूर कर दिया। परिणाम यह निकला की देश में बड़ी संख्या में एक ऐसी जमात का जन्म हुआ जो अंग्रेजी व्यवस्था को भारतीय व्यवस्था से ज्यादा बेहतर बताने लगा। तथा विकास के लिए पाश्चात्य देशो की राह पर चलने की वकालत करने लगा। जिसका परिणाम हम वर्तमान तक भोग रहे हैं।

मैकाले शिक्षा निति के समर्थक यह समझाने का प्रयास करते हैं कि विकास के लिए अंग्रेजी की नितान्त आवश्यकता है, विश्व के साथ चलना है तो अंग्रेजी को अपनाना होगा। लेकिन, ऐसा कहने वाले लोगों की आँखों पर मैकली रुपी चश्मा चढ़ गया है और वह इस बात को नहीं समझ रहे है कि अंग्रेजी को अपनाकर आर्थिक प्रगति हो सकती है लेकिन भारतीयता के साथ विकास नहीं हो सकता। भारतीयता विविधता को आपस में जोड़े रखता है। आज देश की जरुरत मातृभाषाओं के विकास की है साथ ही, विभिन्न भाषाई तकनीकों को अपनाकर एक संवाद पूल बनाने की है जहाँ लोग एक दुसरे से मूल संवाद से अवगत हो सके तथा लोगों के मध्य मतभेद कम हो सकें।

वास्तव में विभिन्न भाषाई तकनीक एवं भावानुवाद के माध्यम से हम एक ऐसे संवाद पूल का निर्माण कर सकते हैं जहाँ सभी जनता अपनी मातृभाषा में ही विचारों का आदान प्रदान कर सकें। संवाद पूल को सफल बनाने के लिए सबसे पहले शिक्षा प्रदान करने, न्याय निर्णय, सरकारी आदेश, बैंकिंग कार्य एवं क्षेत्र में प्रसारित मीडिया को उस क्षेत्र की मातृभाषा में ही कार्य करना होगा। मूल रूप से विचारों को सभी मंच पर मातृभाषा में अभिव्यक्त करने की वास्तविक अनुमति देनी होगी।

स्थानीय भाषाओँ में शिक्षा देने को अनिवार्य करना होगा। अनुवाद विषय के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को भी सम्मिलित करना होगा।

मातृभाषा में शिक्षा प्रदान कर सभी जन एक साथ देश के विकास संबंधी भारतीय समझ बना सकते हैं तथा जब न्याय निर्णय, सरकारी आदेश, बैंकिग कार्य आदि मातृभाषा में होने लगेंगे तब अपने आप सभी का विश्वास एक दुसरे पर होने लगेगा. और जब मीडिया मातृभाषा में संवाद को संचारित कर मातृभाषा संवाद का निर्माण करेगी तब सभी देश के विकास हेतु एक साथ प्रयास करने लगेंगे. परिणामतः देश भारतीयता के साथ विकास करने लगेगा।

शहरी कृषि: भारतीय कृषि की आज की नीतिगत आवश्यकता

डॉ. शशांक कुलकर्णी
सहायक आध्यापक,
राजनीति और लोकप्रशासन विभाग

भारत में कृषि क्षेत्र के सामने निर्माण हुई विभिन्न समस्याओं का एक महत्वपूर्ण समाधान के रूप मे शहरी कृषि को देखा जा सकता है। जैसे-जैसे शहर और उनकी जनसंख्या बढ़ती जा रही है, टिकाऊ और स्थानीय खाद्य उत्पादन की आवश्यकता भी बढ़ रही है । इस परिक्षेप मे 'शहरी कृषि' खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने से परे विभिन्न प्रकार के लाभ प्रदान कर सकती है, इसलिए यह इस मांग को हल करने के लिए एक उपयुक्त दृष्टिकोण प्रदान करेगी । भूमिगत अवरोधों का समाधान पारंपरिक खेती को भूमि की उपलब्धता से संबंधित कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि शहरीकरण कृषि क्षेत्र पर प्रभाव डाल रहा है। शहरी कृषि के द्वारा स्थानों का रचनात्मक उपयोग किया जा सकता है, जैसे छते, खाली स्थान और सामुदायिक उद्यान। इससे न केवल अधिक भूमि का उपयोग होता है, बल्कि खेत से मेज तक भोजन की दूरी भी कम होती है, जिससे कार्बन उत्सर्जन कम होता है। खाद्य सुरक्षा को प्रोत्साहित करना: शहरी कृषि खाद्य सुरक्षा में सुधार में योगदान देती है, क्योंकि शहरी निवासियों को ताजा उपज मिलती है। फसलों की खेती के माध्यम से शहरी क्षेत्रों में खेतों पर निर्भरता कम हो जाती है, जिससे खाद्य आपूर्ति अधिक लचीली और आसानी से उपलब्ध होती है। यह अशांति के समय विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, जैसे कि हाल ही में दुनिया भर में फैली महामारी में, जब स्थानीय खाद्य आपूर्ति बहुत महत्वपूर्ण थी। शाश्वत रिवाजों को प्रोत्साहित करना: शहरी कृषि में टिकाऊ कृषि पद्धतियों, जैसे जैविक उत्पादन, जल संरक्षण और कम मात्रा में कीटनाशकों का उपयोग, को बढ़ावा मिलता है। यह न केवल पर्यावरण को बेहतर बनाता है, बल्कि महानगरों के लोगों को स्वास्थ्यवर्धक और अधिक पौष्टिक खाने के लिए भी प्रेरित करता है। शहरी फार्म उपभोक्ताओं के निकट होने से अत्यधिक पैकिंग और प्रशीतन की आवश्यकता को कम करते हैं, जो उत्पादित अपशिष्ट और खपत होने वाली ऊर्जा को कम करता है। भारत की कृषि पर होने वाले संभावित प्रभाव: भारतीय किसानों और नीति निर्माताओं ने शहरी कृषि को पारंपरिक ग्रामीण खेती के पूरक के रूप में देखा है। शहरी कृषि की मांग लगातार बढ़ी है, जिससे यह स्वीकृति मिली है। शहरी कृषि को बड़े कृषि परिदृश्य में शामिल करने से भारत को खाद्य उत्पादन विविधता, खाद्य सुरक्षा और शहरी क्षेत्रों में नए आर्थिक अवसर मिल सकते हैं।

शहरी कृषि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता है। इसके माध्यम से ग्रामीण कृषि के ऊपर बढ़ी निर्भरता कुछ मात्रा मे कम हो सकती है। यह आज के बढ़ती जनसंख्या के काल मे आवश्यक है।

तकनीकी विकास से लाभ उठाना: हाइड्रोपोनिक्स और सटीक कृषि प्रौद्योगिकी का विकास शहरी कृषि को डिजिटलीकरण के इस युग में लाभ दे सकता है। शहरी खेती एक टिकाऊ और उपयुक्त विकल्प बन गया है क्योंकि ये सुधार सीमित स्थान और संसाधनों का प्रभावी उपयोग करना संभव बनाते हैं। भारत में शहरी कृषि में प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उपज और उत्पादकता दोनों में काफी वृद्धि करने की क्षमता है, जिससे देश के समग्र खाद्य उत्पादन में योगदान मिलेगा। सामुदायिक सहभागिता का निर्माण करना: शहरी कृषि शहरी निवासियों में सामुदायिक और सामूहिक दायित्व की भावना को बढ़ा सकती है। व्यक्ति अपने भोजन के उत्पादन में सक्रिय रूप से योगदान दे सकते हैं, सामुदायिक उद्यानों में भाग लेकर या स्थानीय शहरी खेतों का समर्थन करके, भूमि और उनके भोजन के साथ एक मजबूत संबंध बना सकते हैं। यह सामुदायिक जुड़ाव न केवल लोगों को एकजुट करेगा, बल्कि उन्हें पोषण और उपभोग के बारे में सही निर्णय लेने में भी सक्षम बनाएगा।

समग्र विचार अपनाना: भारतीय कृषि के ढांचे में शहरी कृषि को शामिल करना खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता और शहरी विकास की जटिल चिंताओं को संबोधित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। भारत सरकार के पास बड़े कृषि कार्यक्रमों के साथ छोटे शहरी खेतों को जोड़कर एक मजबूत और विविध खाद्य प्रणाली बनाने की क्षमता है। इससे चाहे वे शहरी या ग्रामीण हों, देश के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी । खाद्य पारिस्थितिकी तंत्र की खेती के माध्यम से भारत के शहरी कृषि में परिवर्तन लाने की क्षमता है। भारत में कृषि क्षेत्र के लिए बहुत बड़ी आशाएँ हैं, क्योंकि शहरी कृषि का आगमन एक आधुनिक आवश्यकता प्रदान करता है। भारत इस दूरदर्शी रणनीति को अपनाकर खाद्य उत्पादन और शहरीकरण की चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने में सक्षम होगा। 'शहरी कृषि' यह संकल्पना भारत मे टिकाऊ और समावेशी कृषि का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। इस कारण नीति निर्माताओ ने इसके ऊपर गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है ।

गांधीवादी नेता

राहुल कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

एक नेता थे गांधीवादी पढ़े-लिखे नहीं थे लेकिन संघर्षों की भट्टी पर तपे हुये थे और खूब गुने थे हालांकि दस बारह गुटों से उनकी रंजिस थी लेकिन वे किसी के प्रति द्वेष भाव नहीं रखते थे एक बार विरोधी गुट ने उनके किसी आदमी का अपहरण कर लिया उसको मारा-पीटा और उसकी आँखें फोड़ दीं नेताजी ने जब यह सुना तो उन्होंने भी दूसरे गुट के एक आदमी का अपहरन करवा लिया उसको भी उनके आदमियों ने मारा-पीटा जब आँखें फोड़ने का समय आया तो उन्हें अपने आदर्श गांधीजी की याद आई आँख के बदले आँख फोड़ने से तो पूरी दुनिया अंधी हो जाएगी। उनकी आत्मा चीत्कार कर उठी नहीं वे ऐसा हरगिज़ नहीं करेंगे वे आँख के बदले आँख नहीं फोड़ेंगे सो विरोधी गुट के आदमी का एक कान काटकर उसे छोड़ दिया। नेताजी कर्तव्यनिष्ठ और दूरअंदेशी रखने वाले व्यक्ति थे अपने क्षेत्र के गरीब लोगों को देखकर उनकी आत्मा रोती थी उन्हें गांधीजी का जंतर याद आया उनका मानना था कि योजनाओं का लाभ अंतिम पायदान के व्यक्ति तक भी पहुँचना चाहिए। एक दिन उन्होंने सोचा कि जब सरकार कुछ नहीं कर रही तो उन्हें ही कुछ करना चाहिए उन्होंने लघु उद्योग शुरू करने और उनमें गरीबों को रोजगार देने का संकल्प लिया। अगले दिन गाँव के पीछे के सीमावर्ती जंगलों में देशी शराब बनाने की दसियों भट्टियाँ शुरू कर दी गईं। नेताजी स्वराज लाने की इस महत्वाकांक्षा से फुले नहीं समा रहे थे। वे जनहित में नकली नोट बनाने की योजना पर भी काम कर रहे थे और उसके लिए जरूरी उपकरण जुटा रहे थे। लेकिन उससे पहले ही पुलिस द्वारा धर लिए गए| लेकिन उन्हें कोई दुख नहीं था| आखिर लोगों की सेवा करते-करते जेल गए थे। और यह कोई पहली बार थोड़ी है| अपने लोगों की भलाई के लिए वे पहले भी कई बार जेल जाते रहे थे। पुलिस अधिकारी ने उन्हें एक थप्पड़ मारा नेताजी ने दूसरा गाल आगे कर दिया साथ ही अधिकारी के कान में धीरे से कहा कि पछताओगे तुम जैसे बहुत अधिकारी आए और चले गए एक सप्ताह भी नहीं तक पाओगे। साथ ही एक वरिष्ठ गांधीवादी नेता के साथ अपने संबंधों का खुलासा भी कर दिया अधिकारी डर गया उसने नेताजी को छोड़ दिया सुबह से भोजन न करने और न नहाने के कारण उनका चेहरा म्लान पद गया था किन्तु लोगों की भलाई का उनका सपना म्लान नहीं पड़ा था वह उनकी आँखों में उसी चमक के साथ तैर रहा था। नेताजी ने अपनी टोपी सिर पर तिरछी जमाई और किसी नई योजना का बारे में सोचने लगे।

विदाई

चंदन कुमार सिंह

शोधार्थी,हिन्दी विभाग

दाई ने कहा- बिटिया हुई है लेकी जच्चा नई रही.....

हर्ष के अवसर पर सब शोक संतप्त हो गहरे विषाद में चले गए। वैदेही तीसरी संतान के प्रसव पीड़ा से कराहती हुई इस मिथ्या जगत से प्रयाण कर गयी। उसकी पहली दो संतानें भी लड़की ही थीं और यह तीसरी भी लड़की ही हुई। मां की छत्रछाया छिन जाने के बाद इस नवजात को उसकी दादी के गोद में शरण मिली। दादा अपने गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और पीढ़ियों से गांव में उनकी धाक जमी हुई थी। दादा की दूसरी पत्नी जो उनकी साली थीं और जिनसे पहली की मृत्यु के बाद उन्होंने शादी की, उसे अपना दूध पिला कर पाला। दादी के वात्सल्य की वर्षा मंजू में धारासार होती और बाकी पोते-पोतियों पर बस अब उसके छींटे पड़ते। चाचियों से भी उसे खूब स्नेह मिला और वह घर की लाडली हो गई। उसकी हंसी से घर के बड़ों में विचित्र जादू-सा छा जाता और सब बरबस उसकी ओर खींचे चले आते। बीतते हुए समय के साथ उसका नाम सबके ज़बान पर बैठ गया। प्रवेश के साथ ही हर कोई यह पुकारता--- मंजू!! मंजूषा नाम दिया था उसे उसके परिवार ने। वह दुर्भाग्यपीड़िता होकर भी परिवार के लिए सुखद सौगातों की मंजूषा थी। वैदेही का बालरूप जिसने भी देखा वह इस बच्ची को देखकर यही कहता कि वैदेही ही देह बदलकर फिर से इस घर में आयी है। लेकिन सच्चाई से मुंह फेर लें तो वह झूठ नहीं हो जाता। वैदेही, वैदेही थी और मंजू, मंजू। उसकी उपस्थिति वैदेही की स्मृतियों को विस्मृत करने का एक परोक्ष माध्यम था।

मंजू दादी को मां कहती और बाकी सबसे उसका वही नाता था जो वैदेही की बेटी का होता। मंजू को दादी से रोज कहानी सुनना होता था और वह दादी से जाकर कहती- "दादी! खाबोलो! खाबोलो!" उसके मासूम आग्रह पर स्नेह से भीगीं दादी उसे रोज रात में कहानी सुनाती।

एक तलैया में एक मछली रहती थी। एक दिन वह नहाकर बाल सुखा रही थी। तभी वहां एक कौआ आया और उस मछली से कहा- खाबोलो! खाबोलो!। मछली को यह बात अच्छी नहीं लगी तो वह केंकड़े के पास गयी और कहा – केंकड़ा दादा! केंकड़ा दादा!घरे आछे

हां बहिन घरे आछे, दे बहिन के पीढ़ा-पानी।

काइजे आसे छे , कि काइजे

पोद्दा पाते चुइल सुखाते छिली एकटा कौआ बोइललो खाबोलो खाबोलो

खाबो बोइललो भालो कोइरलो लो बोइललो केने

रोहू कतला सभी के पास वह मछली बारी-बारी से जाती लेकिन मंजू कब के ही निद्रा रानी मिलकर सपने में यह कहानी देखने लगती। दादी कहानी पूरी करती और सो जाती।

दादी के सभी कामों में हाथ बंटाने वाली मंजू न सिर्फ दादी बल्कि दादी और पूरे परिवार की प्रबंधिका बन गई थी। गांव के स्कूल से आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद उसने आगे की पढ़ाई के लिए 10 किलोमीटर दूर एक उच्च विद्यालय में दाखिला लिया। नौवीं, दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा की यात्रा चिरपरिचित गति से पूर्ण हो चुकी थी लेकिन उन्नीसवां सावन और बारहवीं कक्षा उसकी ज़िन्दगी में कैसी उथल-पुथल की आंधी उठाने वाली थी इसका अंदाजा स्वयं न मंजू को था न घरवालों को न ही रोहित को।

मंजू के चेहरे की बनावट में कोई विशेष आकर्षण नहीं था किन्तु उसकी आंखें सहज ही इस इस कमी को ढंक लेती थी। फिल्मी गीत उसे ज़ुबानी याद रहते और अंत्याक्षरी में तो वह ऑल इंडिया रेडियो बन जाती। नृत्य उसका प्रिय शगल था और इस कारण वह स्कूल में अलग पहचान रखती थी। वयसुलभ चंचलता, घनी-लंबी केशराशि, आकर्षक डील और दूधिया रंग उसे न सिर्फ लड़कों में चर्चा का विषय बनाती बल्कि लड़कियों में भी वह ईर्ष्या का विषय हो चली थी। स्त्रियों की प्रतिभा को उनके सौन्दर्य से मापी जाती रही है और मंजू प्रतिभा और सौन्दर्य की समानांतर गाड़ी में सवार थी। बीते सालों में मंजू कई प्रेम-प्रस्तावों को ठुकरा चुकी थी लेकिन रोहित मंजू के देखे ख्वाबों की तस्वीर से मिलती जुलती सूरत का मालिक था। रोहित मंजू का सानिध्य पाने के लिए उसकी सहेलियों का अज़ीज़ बना और स्कूल साथ आने जाने लगा। पहले अलग अलग साइकिल में, फिर एक ही साइकिल में और फिर साइकिल के कैरियर से अगले फ्रेम में आने की भी एक रोमांचक यात्रा है। क्लिनिक प्लस से धोई हुई मंजू की जुल्फों की खुश्बू और मंजू को रोहित का स्पर्श, दोनों के दैनिक जीवन के सबसे सुखद क्षण थे। स्कूल का सफर दोस्तों के हंसी ठहाकों के साथ कटता, पर दोनों जिंदगी का सफर भी इसी तरह काटने के अभिलाषी थे। एक साथ जाने-आने और एक ही कक्षा में पढ़ने के दौरान दोनों पास आए और पास आते-आते इतने पास आ गये कि दोनों के बीच एक सूत भर का फासला न रहा। वन के बीच अवस्थित विद्यालय का प्रांगण, पुराने भवन के खंडहर और प्रेमी जोड़ों के चुंबन-परिरंभन के निमित्त काम्य एकांत और इसकी सहज उपलब्धता, दोस्तों का उकसावा और किशोरवयी जिज्ञासा।

इन सबके सम्मिश्रण से एसी स्थिति बनी कि दोनों ने परस्पर कौतूहल को सानंद भोगा और उनके मानस में पुण्य का संतोष और पाप की घृणा एक साथ तैर गई। यह अनुभूति उन्हें बार-बार खींचती और वे वहीं एकांत ढूंढते और उस एकांत में धागा भी धारण करना दोनों को गवारा न होता था। साथ आने-जाने की बातें गांव मुहल्ले के लोगों तक तो आ ही गई थीं और दोनों के बीच पलने वाले प्रेम से सब परिचित हो ही गये थे लेकिन यह बात आयी-गयी हो गई थी। अनैतिक और अवैध संबंध उबड़-खाबड़ पथरीले रास्तों में खाली ट्रैक्टर की सवारी की तरह होती है जिसमें देह तो झकझोर कर हिचकोले खाता है, अनिच्छित शोर भी बेदम करने वाली होती है। ग्रामीण परिवेश में प्रेम-प्रसंग चौपाल में रस लेने का विषय बन जाता है और अकस्मात एक दिन मंजू ने भी यही शोर अस्पष्ट सुना-

राजदीप- का सखीचंद, सुनिलियइ मरदे कि पंडितवन के छौंड़ी बढ़ईया से फंसल हई।

सखीचंद- हां बउ, छौंड़इन तो बहुते कुछ बोलथिनला।

राजदीप- तो घरे पंडी जी नै सुधारलथीन।

सखीचंद- दूर.. मरदे! जे दतुन में नै होलइ से कचरा में होतइ

अब उसे भय मिश्रित चिंता अपने चंगुल में ले रही थी। धनाढ्य और प्रतिष्ठित होने के कारण मंजू के घर तक तो बातें नहीं पहुंच रही थी लेकिन सब ओर उसके चरित्र की उपमाएं गढ़ी जा रही थीं। मंजू को इसकी खबर थी। काफी परेशान थी मंजू। उसे नींद में भी यही लगता कि कोई आकर दादा से उसकी कारस्तानियों का ब्यौरा दे रहा है। वह समझती थी कि जो लाड उसपर लुटाया गया है उसका वह क्या प्रतिदान दे रही है। अब चिड़चिड़ापन भी उसका सहचर हो चला था। एक दिन दादी की मामूली-सी बात पर उसने खुद को कमरे में बंद करके डेटॉल की नयी शीशी पूरी की पूरी पी ली। दादी के बहुत रोने पर भी उसने दरवाजा नहीं खोला। पेट-मुंह चलने के बाद जब असह्य हो गया तो उसने दरवाजा खोला और उसे अस्पताल ले जाया जा सका और उसकी जान बची। किसी तरह इंटर के इम्तिहान गुजरे। अब तक भाइयों को भी खबर लग चुकी थी। स्कूल नहीं जाने के कारण दोनों मिल भी नहीं सकते थे और नहीं मिल पाने के कारण मिलने की इच्छा भी उत्तरोत्तर बलवती होती जा रही थी। अदम्य इच्छाओं के पूरे होने की निश्चितता नियंता अवश्य तय करता है और यह हुआ तब जब दोनों का सामना परचून की दुकान में हुआ और फिर दोनों ने पत्र व्यवहार का जरिया खोज लिया। दोनों एक-दूसरे को ख़त लिखते और उसमें ज़िक्र होता साथ गुजारे हसीन लम्हों का, बीत रहे वक्त में जुदाई की गहराई का और सुखद भविष्य के कोरे सपनों का जिसका ना कोई ओर होता ना कोई छोर।

लेकिन इन पत्रों में जादू था जो दिनों-दिन बढ़ते प्रतिरोध के बावजूद दोनों के संबंध को प्रगाढ़ करता जा रहा था।

एक दिन ऐसे ही पत्र में मंजू को प्रस्ताव मिला घर छोड़कर भाग चलने का। पहले तो मंजू ने इनकार किया लेकिन रोहित के संग गुजारे हुऐ पलों को फिर से जीने का एक ही संभव रास्ता उसे भी यही नज़र आया। फिर योजना बनी और उस बीच मंजू का मन स्मृतियों में सहेजे लाड और अपने प्रेम के बीच पेंडुलम की तरह झूलता रहा जिसमें बीचोंबीच आता था परिवार। एक तरफ परिवार और स्नेह था और दूसरी तरफ भावुकता और आवेश वाला प्यार। कमरे से दहलीज लांघने तक हर बांए क़दम पर प्यार का भविष्य उसे अपनी बांहों में बुलाता लेकिन दांए क़दम पर एक अनाथ को अनायास मिले अपनत्व,आत्मीयता, अपेक्षाओं और कर्तव्यों की याद दिलाती। बायां क़दम हल्का होकर सातवें आसमान पर ले जाता और दायां क़दम भारी होकर जमीन पर ले आता। बाएं क़दम पर याद आते दादी के वात्सल्मय हाथों का स्पर्श और दाएं क़दम पर रोहित के स्पर्श से होने वाली सिहरन। बाएं क़दम पर घरवालों का स्वयं के लिए किसी नवप्रसूता से स्तनपान करा देने की सविनय याचना और दाएं क़दम पर भावुकता के क्षणों में साथ जीवन-मरण के शपथ। बाएं क़दम पर याद आती शैशव अवस्था की अस्वस्थता के कारण महीनों रातें जागती दादी और दाएं क़दम पर रोहित के बिछोह में रोकर काटी गई रातें। कमरे से चौखट तक इसी उहापोह में पहुंची और चौखट लांघी बाएं क़दम से, वह क़दम जो रोहित के नाम का था और अगले क़दमों के साथ दाईं ओर का भारीपन भी जाता रहा और साथ में जाती रहीं स्मृतियों में लिपटीं आत्मीयता और अपनत्व और जलती रही अपेक्षाओं और कर्तव्यों की चिता।

उस सुबह दस बजे के करीब जब किसी काम से दादा ने मंजू को आवाज लगाई तो कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। फिर दादी को आवाज लगाई। मंजू के बारे में पूछा। वह कमरे में नहीं मिली। खोजबीन शुरू हुई। सहेलियों के यहां लोग भेजे गए। मंजू कहीं नहीं मिली। हर संभावित जगह से निराशा हाथ लगी। शाम तलक कुटुंब के सभी बड़ों को रोहित-मंजू की कहानी का भयंकर विस्फोट हुआ तो सब आक्रोश से भर गए। मार-काट तक भी बात आई। एक इशारे भर से रोहित का घर जला दिया जाता, मगर दादा ने और फजीहत नहीं होने दिया। जिस खानदान में दो पीढ़ी पहले घर की नौकरानी पर सिर्फ एक टिप्पणी पर एक मुसलमान के तीन टुकड़े कर दिए थे उस परिवार की लड़की भागी थी। यह किसी के लिए उपहास का विषय था तो किसी के गर्वोन्नत सिर को पाताल तक झुका लेने की नियति। लेकिन इस तरह जब कोई लड़की घर से निकलती है तो सिर्फ घंटे भर के लिए ही क्यों न निकले, दागी तो वह हो ही जाती है। मंजू के घरवालों ने उसे मरा हुआ मानकर उसका श्राद्ध कर दिया।

मंजू नाज़ से पली लड़की थी और उसकी इच्छाएं कहीं आदेश हुआ करतीं थीं। उसके नखरे उठाने में सबने कोई कसर नहीं उठा रखी थी। चांदी की थालियों में परोसे गए भोजन में व्यंजनों की विविधता की अभ्यस्त उसकी जिह्वा रोहित के साथ एक उजड़े हुए पलस्तर और सीलन भरे कमरे में किरोसीन के स्टॉव पर सेंकी गईं अधपकी और बेडौल रोटियां भी चाव से खा ले रही थी। अभी तो वे एक दूसरे को सिर्फ देखकर भी पेट भरा हुआ महसूस कर सकते थे। कहां तो मंजू के विवाह के संजोए पूरे कुटुंब के सपने और कहां उन सपनों का गला घोंटकर मौज मनाती मंजू। मंजू को उसके यतीम होने के अहसास से महरूम रखने वाले परिवार पर खुद को भागने को लाचार साबित करने के लिए लगाए गए लांछन। प्रेमपात्र जब निर्दयता और क्रूरता से पेश आए तो धीरे-धीरे घनीभूत प्रेम का घनत्व कम होने लगता है और मंजू तो आखिरी बेदर्द बन गई थी। पगड़ी तो कुचल कर गयी ही थी, अब झुके सिर पर जूते भी मार रही थी और यह दादा की सहनशक्ति की सीमा से बाहर थी। उन्मुक्त और उन्नत व्यक्ति का घुटन से जो हो सकता था वही हुआ। बिन मां की बच्ची को जिस औरत ने पाला वह उसे ही वैधव्य का दु:ख दे गयी और उसकी उपाधियों में एक उपाधि और जुड़ गयी-आस्तीन का सांप।

वक्त अपनी रफ़्तार से चलता रहा और मंजू अब हर स्त्री के काम्य सुख की अनुभूति की अवस्था को प्राप्त कर चुकी थी। मातृत्व उनके जीवन में नये एहसासों के साथ नयी खुशियां भी लेकर आई थी। दोनों सपनों देखे सुख भोग रहे थे। मंजू की पहली संतान भी लड़की ही थी। सास तो बिल्कुल नाखुश थी लेकिन रोहित ने साथ दिया और मंजू को ताने सहने की हिम्मत हुई। बड़े लाड दुलार से अपनी बेटी को पाल रही मंजू तीसरे साल फिर गर्भवती हो गई। मंजू की दूसरी संतान भी लड़की ही थी। अब तो ताने भादो की बरसात सरीखे कड़क-गरज के साथ बरसते। सास दूसरी लाने के फ़िराक में थी और कभी-कभी रोहित का जी भी उचाट हुआ सा प्रतीत होता था। वह प्रेम जो मंजू को हरदम हरा रखता था, अब डंठल से विलग बासी फूल की तरह कुम्हलाया जान पड़ता था। इस बीच मंजू अपनी बड़ी बहन मधु के करीब आ गई थी और दूसरी बेटी के समय देखभाल के लिए मधु की बेटी सोनी को अपने यहां कुछ महीने के लिए बुला ली थी। सोनी भी जवानी की दहलीज में थी और रोहित फुसलाने में पी.एच.डी था। चोरी छुपे चूमा-चाटी चल रही थी। एक दिन मंजू ने दोनों को गुंथे हुए देखा और उस दिन जिस गुमान के साथ वह कहती थी कि 'जात चाहे जैसा चुना, पति मैनें अच्छा चुना', यह गुमान सूखी डाली की तरह टूट गया। रोहित से बातचीत करने पर मंजू बस यही जान पाई की वह अब तीन बच्चों की मां हो गई है और पुरुष तो रीढ़ टेढ़ी होने तक बीस बरस का छबीला नौजवान ही रहता है।

शौतन तो कोई चाहती नहीं तो प्रतिरोध पर विराम लगाना ही विकल्प बचा। बात किसी तरह छिपा ली गई और समय के साथ वह आयी-गयी हो गई। समय की गति किसी के बदले कहां बदली है। इसकी गति भी नितांत इसकी ही है और इसकी लाठी भी इसकी तरह ही अलहदा। चोट तो नहीं लेकिन दर्द उससे होता है।मंजू की बड़ी बेटी प्रतीक्षा भी अब बीसवें सावन की बरसात देख रही थी और मंजू और रोहित की कहानी बीसीयों मुंह चटखारे लेकर कहते देख चुकी थी। वह इस रास्ते का उजला-काला सब समझती थी लेकिन दिल के चोर दरवाजे से जब कोई घुसकर उसे अपना उपनिवेश बना लेता है तो उसपर अपना जोर कहां रह जाता है।प्रतीक्षा के दिल की धड़कन भी अब धक-धक करने के बजाय साहिल-साहिल करने लगी। प्रतीक्षा न सिर्फ बीस की थी बल्कि इस रास्ते तो मंजू के मुकाबले बीस भी थी। इश्क़ को शायर यूं ही क़मा‍ल का शय नहीं बतलाते, इश्क़ वाकई कमाल होता है और हर कोई कभी न कभी इसकी गिरफ्त में आता ही है। प्रतीक्षा भी मंजू के बनाए रास्ते को नयी मंजिलें दे रही थी। छिपाए रखने के लाख जतन हुए, पर ऐसी कोशिशें नाकाम ही होती रही हैं। एक दिन फिर उसी चौपाल पर मंजू ने अस्पष्ट सुना-‘ मरदे! बांस के बुदा में बांसे ने जनमतोन’।

इस वाक्य के साथ ही मंजू के अपने अतीत का चलचित्र दामिनी की भांति मस्तिष्क में कौंध गई। घर तक पैदल पहुंचने में उसे पांच मिनट लगते थे जो आज पांच घंटे लग रहे थे और उसे प्रतीत हो रहा था कि सब उसे ही हिकारत भरी नजरों से देख रही है। जैसे उसे किसी ने जूतों की माला पहनाकर, मुंह में कालिख पोत गधे पर बैठा दिया है और पूरे गांव के बच्चे इस तमाशे में पीछे पीछे चल रहे हैं। कुछ दिनों तक उसे घर से निकलने की हिम्मत ही नहीं होती थी। उसे लग रहा था कि अतीत अब अतीत हो चुका है। उसने सोचा भी नहीं था कि अतीत वर्तमान को इस तरह ग्रसने को आतुर होगा। मंजू ने प्रतीक्षा के लिए जोड़ी गई चीजों की पड़ताल की और योग्य वर की तलाश शुरू हुई। कहीं मंजू को कुछ नहीं जंचता, तो किन्हीं को प्रतीक्षा जंचती और मंजू-रोहित न जंचते। प्रतीक्षा को जब भी लड़केवालों के सामने आना पड़ता वो पूरी कोशिश करती कि बात बिगड़ जाए। कभी वह लड़के वालों के सामने बहरी बन जाती तो कभी कुछ पूछने पर तुतलाने लगती। हर बार मंजू को लड़केवालों के सामने शर्मिंदगी महसूस होती। मारे शरम के वह किसी के सामने प्रतीक्षा के रिश्ते के लिए मुंह भी नहीं खोल पाती और उसका क्रोध बिलाकर रह जाता। प्रतीक्षा अपनी सब बातें साहिल को बताती। अब के प्रेमियों को तकनीक से इतनी सहूलियत हुई है कि वे आभासी रूप से एक-दूसरे को महसूस कर सकते हैं। एक रात जब नींद से बोझिल मंजू पानी के लिए फ्रीज तक जा रही थी तो प्रतीक्षा के कमरे का बल्ब जलता हुआ दिखा। उसे लगा कि बेटी पढ़ रही है लेकिन करीब आने पर उसे कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी।

प्रतीक्षा दरवाजा लॉक करना भूल गई थी। अंदर जाने पर मंजू ने देखा कि प्रतीक्षा बहुत कम कपड़ों में वीडियो कॉल पर है। पहले तो प्रतीक्षा को पता नहीं चला। फिर मंजू ने उससे फोन छीनकर खूब डांटा और दोनों ने ही आंखों ही आंखों में रात काटी। मंजू की आंखों को पूरे वेग से बहने का भी उचित अवसर मिला और मन को स्मृतियों के सागर में डूब जाने का। सुबह प्रतीक्षा बाहर नहीं निकली। शाम तलक भी न निकलने पर मां का दिल नहीं माना और वो उसे समझाने गई।

'चलो, चलकर खाना खा लो।'

'मुझे भूख नहीं है, तुम्हारी बातों से ही पेट भर गया'

'तुम्हें कितनी बार समझाया कि ऐसा नहीं करना चाहिए, साहिल अच्छा लड़का नहीं है, तुम्हारी बहन पर इसका क्या असर होगा, लोग क्या कहेंगे?'

'यह सब तुम कह रही हो मां!

मंजू समझ गई कि अब और कुछ कहना दबी हुई कहानियों के अप्रकाशित पन्नों तक जाना है और इससे उसका ही नुकसान है, वह शांत रह गई। तलाश थम गई। एक सुबह फूलों से सजी हुई होंडा सिटी की पिछली सीट पर उनींदी प्रतीक्षा दुल्हन के जोड़े में साहिल के साथ बैठी थी । मंजू और रोहित के साम-दाम-दंड-भेद को नये उमर के इश्क से मुंह की खानी पड़ी।

ग़ज़ल

सूरज रंजन
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

(1)

मिलके बिछड़ने का जो सदा सिलसिला रहा
झोली में मेरे अंत में फिर क्या बचा रहा
वो रौंद कर मुझे यहाँ से कूच कर गए
मैं रास्तों सा उनके क़दम में बिछा रहा
जो भी मिला था उन से कभी इश्क़ बूँद सा
मैं बूँद को बना के समंदर लुटा रहा
असरार इश्क़ का सदा इन आम है गुरु
क्या हो गया हूँ और मैं क्या ही जता रहा
वो ऊँगली झूठ की पकड़ के आगे बढ़ गए
मैं सच के सजदे में ही अभी तक झुका रहा
माना कि उन्होंने हमें भुला दिया
मैं उनके ही वादे को अभी तक निभा रहा

(2)

दम्भी इंसानों को तो बस अपना दुःख दिखलाना है
जबकि जंगल, बादल, दरिया सबका एक फसाना है
अदना सा जीवन पाके तुम ऊँचे कितने ख़्वाब सजाते
जबकि फ़ानी दुनिया में इक दिन मिट्टी हो जाना है
कभी काटते तुम जंगल तो कभी सुखाते हो दरिया
अपनी ख़ुदगर्जी को साहब तुम्हें विकास बताना है
वृक्षारोपण की तस्वीरें, बरख़ुरदार बहाना है
सीमेंट, सरिया और ईंटो का जंगल तुम्हें उगाना है
जो तुमको अच्छा लगता है पा लेते हो छल-बल से
सत्ता-लोलुपता का तेरा यह इतिहास पुराना है
दो-चार विफलताओं से क्या ही घबराना है
गुच्छे की अंतिम चाभी से भी ताला खुल जाना है

(3)

सदा अपनी यूँ नज़रों से उतरता ही रहा हूँ मैं
फ़रेबी राह से फिर भी गुज़रता ही रहा हूँ मैं
सँवरने के लिए सौंपा था ख़ुद को तेरी सोहबत में
तेरी पर रहनुमाई में बिखरता ही रहा हूँ मैं
मुझे उड़ना था जिन पंखों से तेरे साथ में हमदम
उन्हीं पंखों को दाँतों से कुतरता ही रहा हूँ मैं
थी जलती धूप से आँखें तुम्हारी जो सफ़र में तो
हमेशा स्याह उनमें रंग भरता ही रहा हूँ मैं
जहाँ मुझको था होना उस जगह पे और कोई है
कई मौक़े भी आए पर मुकरता ही रहा हूँ मैं
नहीं करना था जो अक्सर वही करता रहा हूँ मैं
बरसना था जहाँ मुझको, गरजता ही रहा हूँ मैं

(4)

जो हुए दूर थे तेरे आँचल से हम
ख़ूब बरसे थे तब यार बादल से हम
छोड़ कर तू मुझे बढ़ गयी आगे अब
और ठहरे वहीं पर हैं पागल से हम
मृग मारीचिका सा हमारा है इश्क़
पास लगती हो तुम पर हैं ओझल से हम
मैं अधूरा इधर, तू अधूरी उधर
दोनों मिल के बने चल, मुकम्मल से हम
डर अकेले लगे, हाथ थामों मेरा
फिर गुज़र जाएँगे, गहरे जंगल से हम
ना लगेगी नज़र आपको फिर कभी
ओढ़ लो आप हमको हैं काजल से हम
एक कोने में गुमसुम पड़े रहते अब
यार से पूछो कितने थे चंचल से हम
क़त्ल करते रहो मेरे जज़्बात का
ख़ून में डूबे आख़िर हैं मक़्तल से हम

ग़ज़ल

लव कुमार मंडल
प्रयोगशाला सहायक, पर्यावरण विभाग

अब साँस घुटती है, क्योंकि जहरीली हवाएँ हो गई।
किस तरफ जाये हम, धूमिल सारी दिशाएँ हो गई ॥

शुद्ध और अशुद्ध वायु में, अब संतुलन कहाँ है।
हवा कार्बन मोनो ऑक्साइड और मीथेन वाली हो गई॥

हमारे सेहत पर बीमारियों का ठिकाना हो गई ।
अस्थमा और कैंसर जैसे रोग हम पर भारी हो गई॥

वायु प्रदूषण को बढ़ाया, वाहनों के धुएँ ने।
सड़ रहे कचरे से दूषित में फिजाएँ हो गई॥

वृक्ष दे ताजा हवा, पीते रहे वे खुद जहर।
विकास की दौड़ में, उन बेचारों की कटाई हो गई॥

लील जाएगी, प्रकृति हम सबको एक दिन।
अंत है नजदीक हम सब का ये सारी संभावनाएँ हो गई॥

सांझ

देबश्रिता दास
बी.एड, शिक्षा विभाग

ढलती धूप की नशा धीरे धीरे चढ़ने लगी।
एक-दो छोटे छोटे तारें, हीरे की छींटे खिलने लगी।
हवा भी महकने लगी, जैसे नववधू की
हाथों की मेहंदी प्रेम की शेखिया बखारने लगी।
मदमस्त हुई चन्द्रमा, की बादलों के पीछे से ताका झाकी.....
सविता भी सोने को हुई उतावला,
होश न सम्भाल सकी।
किसी विरहिणी की अश्रु सी छलकी मिठी दर्द
घटाओं में छाने लगी, उदास हुआ खुशी का माहौल
एक खुमारी सी फैलने लगी।
और यह खुमारी जब पूरी तरह चड़ जायेगी,
रात कहलायेगी।
मेहकती ज़ुल्फो में लेकर अंगड़ाई,
शीतल पवन को अपनी आंचल बनाकर,
लालिमा का मलमल को ओढ़,
थके हारे दिन को रात का ज़ाम पिलाने
जो दबे पाँव आयेगी;
वह सांझ कहलायेगी।

ज़िंदगी

मृत्युंजय कुमार शांडिल्य
सिविल अभियांत्रिकी विभाग (प्रथम वर्ष)

ज़िंदगी एक नहर है,
पहर - दोपहर हर पहर में,
नया एक पर है,
ज़िंदगी एक नहर है।
वो बचपन की बातें,
ये सुनी सी रातें,
कहीं जा रही है,
टहरना न इसको बचा कुछ सबर है,
ज़िंदगी एक नहर है।
तुम रोओ या गाओ,
हसों - मुस्कुराओ,
इसे क्या फिकर है,
ज़िंदगी एक नहर है।
यदि जन्में कोई बच्चा,
या मरता कोई जच्चा,
जन्म से मृत्यु तक,
यही तो सफर है,
ज़िंदगी एक नहर है ।

खूबसूरत पुरुष

शाम्भवी, पीजी
तृतीय सेमेस्टर, जनसंचार विभाग

बहुत लिखी गयी कविताएँ,
स्त्रियों की बिंदी पर,
उनकी पहनी हुई साड़ी पर,
उनके केशों से उलझते झुमके पर।

पर किसी ने जिक्र नहीं किया,
पुरूषों के आभूषण पर,
जो सादगी से सुलझे रहते हैं,
जिक्र नहीं किया इनका
किसी पंक्तियों में,
क्या आभूषण है इनका?
क्या है इनकी खूबसूरती?

आत्मविश्वास की सीढ़ी पर
हर वक़्त ये भी अग्निपरीक्षा देते है,
मन की ज्वाला क्रोध में लिपटी तो दिख जाती है,
पर अग्नि जैसी परिश्रम इनकी कहीं छिप जाती है।

परिवार की मुस्कान देखने को तरस जाते है,
कैसे खुश रखना है,
कैसे गम में पुरी निष्ठा से साथ निभाना है,
इसी हिसाब में जोड़- घटाव भी सीख जाते है।

समय का कांटा इनके चारों तरफ भी मंडराता है,
कम वक़्त में, हर काम समय पर करनी है
शायद यही कारण है,
इनकी कलाई पर घड़ी भी खूब इतराती है।

स्त्री की रंगीन साड़ी इनको खूब भाती है,
यही रंग तुमपर जँचता है, यह तो कह देते है,
जब खुद की बारी आती है, कोई भी रंग दे देना,
यहीं कह कर हर उलझन सुलझा देते है,

क्या मैं ये कहूँ खूबसूरत पुरुष इसी को कहते है,
या फिर ये कहूँ इनका ये आभूषण ही इनकी सज्जा है?
या फिर जिम्मेदारियों के पहाड़ ने इनके शौक को मारा है?
हँसमुख चेहरे के पीछे, मौन बैठा इनका मन,
इनको अपने सही ख्वाबों से दूर लेकर भागा है या
फिर यहीं इनका आभूषण है,
जो हमेशा के लिए इन्होंने अपनाया है।

शिक्षक - एक मार्गदर्शक

निर्भय कुमार, शोधार्थी
व्यवसाय प्रबंधन विभाग

किसी कुशल कुम्हार की तरह
जो गीली मिट्टी को, देता है शक्ल
सुन्दर बर्तनों का |
या, जैसे कोई मूर्तिकार
जो रास्ते के पत्थर को तराश कर
बना देता है भगवान |
बिलकुल वैसे हो तुम |
या, जैसे कोई मां
जो बिना भेदभाव किये रूप और गुण का
लुटाती है ममता एक सा
अपने हर बच्चे पर |
या, जैसे कोई चित्रकार
जो भरता है रंग
किसी चित्र में
बड़े ही सतर्कता से |
बिलकुल वैसे हो तुम |
वो तुम्हीं हो,
जो देता है नई दिशा
बाल मन को और,
एक ठोस आधार
उनके सपनो को भी |

जो सजाता है दुनियां,
और सिखाता है हुनर
सपनों को हकीकत में बदलने की |
वो तुम्हीं हो जो बांटता है ज्ञान
बिना कुछ पाने की अभिलाषा के |
जो जलाता है दीप, ज्ञान का
की हो हर आँख में खुशियों की चमक |
वो तुम्हीं हो,
जो करता है सुसज्जित मानवता को
अपने ज्ञान और अनुभव से
बिलकुल सैनिकों की तरह
की कर सके मुकाबला |
हर चुनौती का डट कर
अपने स्वर्णिम अभियान के पथ में |

कौशिक कुमार होता
(इंटीग्रेटेड बी.ए. बी.एड.)

खुली जब मेरी नयनो से नयन,
पायी मै वह ईश्वरीय सत्य ,
जिन्हे बापू ने दिखाया ।

वही सत्य को मन में ठाने
मै जीवन का पथ बनाई।

वही सत्य,
जो गुलामी अन्धेरा को चिरता हुआ,
आजादी का रोशनी फैलाया।
अनेकता को छोड़ता हुआ,
समस्त राष्ट्र मे एकता का गुलदस्ता बनाया।

खुली जब मेरी नयनों नयन
पायी मै वह ईश्वरीय सत्य
जिन्हे बापू ने दिखाया।

वही सत्याग्रह ,
जो संघर्ष का हथियार बनकर,
हिंसा, अन्याय, अधर्म, शोषण का विनाश किया।
समस्त जग मे धर्म ,न्याय का पाठ पढ़ाया।
वही सत्य
जो अमित्र के ह्रदय पिघालकर,
मित्र बनाने सीखाया।
जन -जन के मन मे, स्वतंत्रता का तिरंगा फहराया।

खुली जब मेरी नयनो से नयन,
पायी मै वह ईश्वरीय सत्य ,
जिन्हे बापू ने दिखाया।

"वह गर्व की भाषा है हिंदी"

कौशिक कुमार होता
(इंटीग्रेटेड बी.ए. बी.एड.)

मीराबाई और कबीर ने अपनाया जिसे
वह गर्व की भाषा है हिंदी,
समाज को जोड़ने की ताकत हो जिसमें
वैसा सशक्त माध्यम है हिंदी ।
तुलसी और सूरदास ने जिसे चमकाया
वह मातृभाषा है हिंदी,
स्वाभिमान और जनमन की भाषा
भारत की आत्मा है हिंदी ।
जिसे भारतेंदु और प्रेमचंद ने महकाया
वह ज्ञान का सागर है हिंदी,
सभ्यता और संस्कृति की भाषा
हमारी पहचान है हिंदी।
बापू ने जिसे जनमानस का भाषा कहा
वह राजभाषा है हिंदी,
दिल की धड़कन, आशा की किरण
हमारी अभिलाषा है हिंदी।
महादेवी और हरिवंश ने जिसे मान दिया
वह सम्मान का पात्र है हिंदी,
विकास की रेखा, जनमन की भाषा
जीवन की परिभाषा है हिंदी ।
रामधारी और निराला ने जिसका गुण गाया
वैसा सरल भाषा है हिंदी,

जीवन रेखा, नैतिकता की परिभाषा
वह सुंदर सी भाषा है हिंदी ।
जयशंकर और पंत ने जिसका सहारा लिया
वैसा सुबोध भाषा है हिंदी,
जिसने मनमोहक काव्य सुनाया
हर दिल की अरमान है हिंदी ।
हजारी और चतुर्वेदी ने जिसे सबकुछ माना
वैसा सुगम भाषा है हिंदी,
एकता की सूत्र, सफलता की मंत्र
प्रगति की परिचय है हिंदी ।
सुभद्रा और कुंवर ने जिसका मान बढ़ाया
वैसा गौरव गाथा है हिंदी,
जीवन की संवाहक, मूल्यों की संप्रेषक
संस्कारों का परिचायक है हिंदी ।
धर्मवीर और सोहनलाल ने जिसको प्राण समझा
वह मनमोहक भाषा है हिंदी,
कालजयी भाषा, भारत की आशा
वह गर्व की भाषा है हिंदी।

आधुनिक भारत में भ्रष्टाचार

मृत्युंजय कुमार शांडिल्य

क्या कहूं , सवेरा होता है !
क्या कहूं , शाम क्यों आती है ?
क्या कहूं, जन्म क्यों होता है ?
क्या कहूं , जान क्यों जाती है ?
क्या कहूं , क्यों जीवन शुरू हुआ ?
क्या कहूं, विचार क्यों गुरु हुआ ?
या कहूं , विचार न बदलता है !
या कहूं, की ये मन चलता है!
क्या कहूं मैं भारत का किस्सा,
जिसमें सिर्फ बेइमानो का हिस्सा,
नेता सब कोट पहनते हैं,
गरीब सड़क पर रहते हैं।
क्या कहूं मैं प्रशासन की कथा,
सिर्फ व्यथा, व्यथा ही है व्यथा,
यूं तोंद फुलाए चलते हैं,
भैंसे जैसे ये टहलते हैं,
लगता है अगर मिल जाए चोर,
तो मन जायेगें खुद मोर,
आधार घुस लेना जिनका,
न भरे पेट वेतन से इनका ।
माना कि भारत था महान,
थे इसमें बड़े-बड़े विद्वान,
लेकिन अभी क्या होता इसमें,
सिर्फ धूल भरा कंकर इसमें।
अब सुनो कहानी नेता का,
इस देश के सुंदर बेटा का,
अंग्रेजो की नीति अपनाते हैं,
जनता को मूर्ख बनाते हैं,
जब वोट की बारी आती है,
तो क्षेत्र में गाड़ी जाती है,
कहते है करूंगा विकास मैं ,
क्योंकि जनता की आश मैं,
परिणाम वोट का आता जब ,
जीत जाते हैं ये तब,
विकास क्या होगा अब ,
इनके दर्शन अब होगें कब,
अपना विकास अपना विकास,
करते हैं सिर्फ अपना विकास,
देश के असली गद्दार ये,
जनता के गुनहगार ये,
क्या कहूं मैं ज्यादा अब इससे,
जनता की भलाई होगी किससे,
क्या कोई फिर गांधी होगा,
या कोई भगत होगा,
है बस ईश्वर से यही दुआ,
धरती पर भारत रहे बना हुआ।

त्रिभुवन
प्रथम सेमेस्टर, अंग्रेजी विभाग

फ़रेब के फूल खिलते नहीं,
खिलाए जाते हैं।
फ़रोख्ता हैं ये ख़्वाब सारे,
शब ए जम्हूरियत में,
नुमाइश में लगाए जाते हैं।

ग़म था इतना हल्का, क्यों रोते,
रुलाए जाते हैं ।
सगंदिल थे हम भी, नहीं पीते,
पिलाए जाते हैं।

ये क़त्ल ओ ग़ारत, ये दंगे, यूँ ही नहीं मचते,
मचाए जाते हैं ।
रवायत की सूली पे हक़ मेरे, यूँ न चढ़ते,
चढ़ाए जाते हैं।

ज़िक्र-तलब है वो पल आशिक़ी के,
भूले न भलुाए जाते हैं।
क्योंकर जताएं तुझपर भरोसा जबकि हमसे,
रोज़ हज़ारों राज़ छुपाए जाते हैं।

फ़रेब के फूल खिलते नहीं,
खिलाए जाते हैं।
फ़रोख्ता हैं ये ख़्वाब सारे,
शब ए जम्हूरियत में,
नुमाइश में लगाए जाते हैं।

त्रिभुवन
प्रथम सेमेस्टर, अंग्रेजी विभाग

ए पेड़ चल, तू अपनी कहानी बता
तू क्यों है अपनी नीतियों पर अड़ा
क्या तूझे कभी दर्द नहीं होता
क्या तू कभी सब्र नहीं खोता
तुझे काटते हैं, छीलते हैं
वो फूल भी तोड़ ले जाते हैं जो तुझ पर खिलते हैं
क्या तुझे किसी ने बददुआ दिया है या तुझे कोई बीमारी हुआ है,
अगर कि सी के प्यार में खड़ा है तो भाग जा,
तरेा प्यार तुझे भूल गया है अब तो सपने से जाग जा
तुझे याद है वो दिन जब लोग तुझे पूजते थे,
बच्चेरस्सी डालकर झूलते थे, लोग तेरी छाँव में
घंटों बैठ कहानियाँ सुनते थे
झूले सारे उतर गए, बच्चे सारे घर गए,,
तेरे परिवार वाले वो तो कब के मर गए,
तू रो, तू चिल्ला, तू दुख जता,
तू अपनी पीड़ा मुझे बता,
ए पेड़ चल, अपनी कहानी बता
ए पेड़ चल, अपनी कहानी बता

आओ! गीत लिखो

समीर राज
तृतीय सेमेस्टर, स्नातक,
ऊर्जा अभियांत्रिकी विभाग

मेरी आँखों में अपनी नींद भरो
उदास बैठे हो, आओ! गीत लिखो

मेरी हाथों में अपना हाथ रखो
पुरानी यादों की तुम तस्वीर बनो

सपनों के बड़े इमारतों की
तुम केवल एक ईट बनों

गमों के आसूं से भरे पड़े हो
तुम अब माटी से रेत बनो

दूसरों की गुलामी कब तक करोगे
नौकर नहीं अब सेठ बनो

लोगों को मौसम सुहाना लगे
आँधी नहीं अब '**समीर**' बनो

सुरक्षित लड़कियाँ

जया मिश्रा
एम.ए. अंग्रेजी विभाग

माँ की कोख में या दुनियाँ की सोच में
लोगों की भीड़ में या अपनो के बीच में
दोस्तों के साथ या उनके जाने के बाद में
इस जहाँ में या ख़ुदा के मकान में
कब और कहाँ सुरक्षित है लड़कियाँ?
दिन के उजाले में या रात के अंधेरें में
छोटे कपड़ों में या बड़े सपनों में
बचपन में या जवानी में
अपनी कविता में या अपनी कहानी में
कब और कहाँ सुरक्षित है लड़कियाँ?
आप ही बताइए,
कब और कहाँ सुरक्षित है लड़कियाँ?
मुझे दिखलाइए।
बेटी,बहु, माँ, बहन
यहाँ हर दिन सहती है
गंदी नज़रें उन्हें रोज घूरती हैं
जब रास्तों से वे गुजरती है।
“अनजान से दूर रहो” सब बोलते हैं
फिर अपने लोग ही नोचते हैं।
चीखती हैं, चिलाती हैं
मदद की गुहार लगाती हैं
लोग देखते हैं और मुड़ जाते हैं
फिर कुछ दिनों बाद भूल जाते हैं ।
अब आप ही बताइए,
कब और कहाँ सुरक्षित है लड़कियाँ?
मुझे दिखलाइए।

मुस्कान झूठी है

कुछ व्यथाएँ हैं अनकही सी,
अंदरूनी में छिपी, सहमी सी
कहीं वक्त की डोर टूटी है,
शायद ये मुस्कान झूठी है।

ये शांत स्वभाव नए सिरे के
जैसे बहता नीर, नदी तीरे के
कहीं बदलाव में टंगी खूंटी है
शायद ये मुस्कान झूठी है।

धरा से होकर नील गगन में,
पुकार का हाल है खनन में
कहीं दबी हुई किस्मत फूटी है
शायद ये मुस्कान झूठी है।

भला किसे हाल सुनाया जाए,
हँसते हुए ये गुम छुपाया जाए
कहीं जीवन की परछाई रूठी है
शायद ये मुस्कान झूठी है।

यहाँ अब वो इंसान बसते हैं
जहाँ के प्रेम बड़े ही सस्ते हैं
दवा न दर्द की इज्जत लूटी है
हाँ ये मुस्कान झूठी है।

-राहुल सिंह 'रूबी'

मित्रता, एक अनुभव

- सौम्या सत्यतीर्थ
बी.एड. द्वितीय वर्ष, शिक्षा विभाग

संसार का सौंदर्य है “प्रेम”।
प्रेम के जितने भी अस्तित्व हैं
उनमें से एक है “मित्रता”।१

“जीवन” एक आदमी है
और उसकी मुस्कान है “विश्वास”।
उस मुस्कान को बरकरार रखता है
एक अमभनेता, उसका नाम है “मित्र”। २

भाग्य की सर्द से ठिठुरता है जीवन
सामना करता है कोहरेपन का
खो देता है सौंदर्य।
जीवन को वसंत की जरूरत पड़ती है
वो वसंत होता है “मित्र”। ३

जितने भी रिश्तें हैं
शायद सबसे अनमोल होता है “ मित्रता “।
देवोपम मनुष्य होता है “मित्र”।
इसजलए “परम”
“मित्र” के साथ ही रहना पसंद करता है। ४

एक सच्चा मित्र
एक अच्छा इंसान
एक उपलब्धि होता है।
जैसे सुनने के जलए कान की नहीं
मन की जरूरत होती है
ठीक वैसे ही

रोने के लिए कंधे की नहीं
आँखों की जरूरत होती है।
उसको पोछने के लिए हाथ की
और छिपाने के लिए छाती की।
इसीलिए मित्र फरिश्ता होता है।
फरिश्ते ममलते रहते है,
तुम दुःख से प्रेम तो करो! ५

“मित्रता” बातुनि बाँतें, नोक झोंक, मुलाकातें,
मिठी करतूतें, सफर, आशाएँ आदि की समाहरण हैं।
स्मृति की सिंधु में रहते हैं
और एक एक हो के ज्वार के तरह आते हैं। ६

ऐसे ही
“मित्रता” का एक अर्थ पूर्ण पर्यायवाची है
“आलिंगन”।
“आलिंगन” में “आ” का अर्थ होता है
“आजीवन”।
“आलिंगन” बार बार होता है
और “छि” एक बार। ७

मित्रता एक अनुपम अहसास भी है।
है, मेरे परम ममत्र!
तुम्हारा मिलना एक आर्शीवाद है। ८

सुनो, मित्र!
हो या ना हो मुलाकात,
ना हो बातें, मत देना कोई उपहार,
मत पूछना मेरे हालचाल,
मत जताना तुम्हारा प्यार।
एक मित्रता ऐसे भी हो-
जीवन की वो मुस्कान रहे
जितना भी वक़्त गुजारे हैं,
वक़्त और यारी का सम्मान रहे।
बस इतना लगाव रहे
जब भी तुम मेरा नाम सुनो
तुम्हारी आँख और होंठ मुस्कु रातें रहे। १

घर की याद

विशाल राज

पर्यावरण विज्ञान,तृतीय सेमेस्टर

पक गए थे घर की चार दिवारी में,
थक गए थे घूम के गांव की गलियारों में,
उब गए थे खा-खा कर मां के हाथ का खाना,
सुकून मिलता था ये सोच कर ही,
की घर छोड़ कर अब बाहर है जाना।

जब घर छोड़ यहां आए तो,
नए लोग, नई जगह,
खुश तो बहुत थे हम ये सच कर,
अब यहां अपनी आज़ादी होगी, अपनी मनमानी होगी,
यहां पे अपनी नई कहानी होगी।

कुछ दिन तक ये खुशी रही,
फिर एक उदासी छाने लगी,
जो घर छोड़ के आना चाहते थे,
अब उसी की याद आने लगी।

जब भी लेट उठता तो मां की डाट याद आ जाती,
मेस के खाने को देख मां से की बहस याद आ जाती,
पूरा दिन घूमने के बाद गांव की फुलवारी याद आ जाती,
जब आते है रूम में तो घर की चार दिवारी याद आ जाती।

जिस सुकून की तलास में घर छोड़ यहां आए थे,
असल में वह सुकून तो घर पे ही छूट गया,
फिक्र कितनी थी मां को हमारी,
ये बात यहां आके समझ आया,

पापा की डाट पे अक्सर बुरा मान जाते थे,
यहां आके उन बातो की कीमत समझ आई,
लड़ाई हो जाती थी भाई से बिना मतलब के,
दूर हुआ तो उसकी प्यार समझ आई।

वह शामें जो घर वालो के साथ होती थी,
यहां तो एक कप चाय के सहारे कट जाती है,
आना चाहता था जिस घर से दूर,
अब उसी घर की यादें हमेशा रुला देती है,
जिंदगी तो बस गांव में जीते थे,
यहां तो कैसे भी गुजर जाती है,
मुस्कुराहट की वजह तो यहां भी बहुत है,
लेकिन इन मुस्कुराहटों से चेहरा नही खिल पाती है।

कुछ भी कहो घर से दूर होके,
घर की याद बहुत आती है।

-प्रियंका महतो
स्नातक, हिन्दी विभाग

मानव मन सबसे महान
जो अपने मृत्यु का आवाह्न करता है।

खुद को प्रकृति से तोङता है।
अपने को सब जीवो से महान समझता है ।
वृक्षो को काटकर पंक्षियो के अङे फोङता है।

मानव पापी, सबसे पापी
जो पशु पंक्षियो के बसेरा उजाङता है।

वह भूल जाता इस जगत मे हम है जीवित
इन पेङ पंक्षियो के कारण

दुष्ट है मनुष्य, जो नदियो और हवा को प्रदूषित करता है।
वह क्यो? भूल जाता है
जल, वायु ,भोजन ही जीवन है।

वाह! रे मनुष्य
दूध पीते हो, पर गाय नही पालना चाहते।
अनाज खाते हो ,पर किसान नही बनना चाहते ।
शादी करना है,पर बेटी जन्म नही करना चाहते।
ज्ञान आजिर्त करना है ,पर किताब पङना नही चाहते।

सिखो उन चिटियो ,पंक्षियो ,सुर्य, व पेङ- पौधे से
जिनके पास कुछ नही है,पर सब कुछ है।
पेङ- पौधे खङे है एक जगह
सुर्य से प्रकाश, भूमि से जल
वायुमंडल से वायु लेते है

पर किसी का कुछ नही बिगडते है।

पक्षिया जीते है वर्तमान मे,
भविष्य अतीत का चिन्ता न किए
खोज कर दाना खाते है।
फिर क्यो ?मनुष्य पीछे पडे है
उनके घर, दाना-पानी उजाडने को।

निष्ठुर है वह मनुष्य
जो सबसे मुर्ख हो कर भी
सब जीवो से श्रेष्ठ समझता है।

अपने माता-पिता को मारता है
अपना परिवर छोड करके
खुद का परिवर बसाता है।
बोझ लगता है संयुक्त परिवर
बीबी को सर्वश्रेष्ठ मानता है

एकता के जंजीर तोडकर, दूसरो को एकता सीखाता है।
चिटियो के एकता का उदाहरण सुनाता है।
मन मे अंधेरा का पट्टी चढाए,उजला प्रकाश खोजता
है।
मानव मन इतना महान
जो अपने को सर्वश्रेष्ठ समझता है।

कविता- “शिक्षा”

बालकृष्ण
अंग्रेजी विभाग

शिक्षा क्या है ?
शिक्षा जीवन की एक ज्योति-सी है।
यह सत्य की एक किरण-सी है,
यह मानसरोवर की पवित्र धरा-सी है ।
शिक्षा एक वरदान है,
जिसमें छिपे अनेक विश्वास है ।
शिक्षा सत्य है, सत्य की पहचान है,
यह मानव का दीपक है,
समाज का दीपक है।
शिक्षा केवल रोजगार होना नहीं हैं,
यह सभ्य समाज ओर राष्ट्र की शान है ।
शिक्षा क्रांतिकारियों का हथियार है,
यह मानव और समाज की रक्षक है ।
शिक्षा जीवन की शैली है,
यह जरूरतों की भी जरूरत है,
शिक्षा सबका अधिकार है,
यह शांतिका प्रतीक है ।
शिक्षा भेदभ्ज्ञाव का उन्मूलक है, यह सद्भव की शिक्षिका है।
शिक्षा ईश्वर का अवतार है,
शांति स्थापित करना धर्म इसका है ।

मन की उदासी

सुरूचि कुमारी
शोधार्थी
एमएमइ विभाग

मन की उदासी को खत्म कैसे करे?
इस नये दौड़ की दुनिया में कहने को बहुत साधन है मन को लगाने को, पर सब साधन बेशाध्य है,
जब मन उदास हो

शहर की ये रंगीन दुनिया भी मन को उदास किये जा रहा है
एकांत भी मन को उदास किये जा रहे हैं

प्रकृति के ये नदियाँ, ये पेड़, ये आकश, ये मेघ, ये खुले मैदान
दूर से दिखने वाले सूर्य और चाँद सारे हैं, पर कहूँ तो सुनने को कोई पास नहीं

इस तरह मन की बात को कहा कैसे जाए।
मन करता है उदासी को खत्म करे।
पर उदासी को खत्म कैसे करे।

प्रश्न बुद्ध से

इला रानी
शिक्षा विभाग

मैं पूछती हुं बुद्ध तुम्हें
कितना बुद्ध हुए हो तुम ?
यशोधरा की किन बातों पर
इतने क्रुद्ध हुए हो तुम ?

तुम आधी-रात रथ में बैठ
करते हो ये मूक पलायन !
जो सोई, सपनों में खोई
होता उसका मलिन अब आनन ।

सर्वम् दुखम् ,सर्वम् दुखम्
रटोगे नित आगे जाकर के
उसके दुख का कारण बनते
नहीं सोच रहे कुछ?बोलो तुम!

पूज लेगी तुम्हें दुनिया सारी
उनकी हर लोगे हर लाचारी
और पीड़ित वह राजकुमारी
उसकी सुध न लोगे तुम?

तुम बोधि वृक्ष के कोटर बैठो,
या फल्गु तट विश्राम करो ।
तुम अपनी ज्ञान पीपासा का
चाहे जो इंतजाम करो ।

तुम दो जग को कोई दिशा नवीन
रहो परोपकार में लीन
नर को बेड़ी– बंधन क्या ?
स्वच्छंद करोगे विचरण तुम !

युगों – युगों से यही रीत है
स्त्री के साथ यही सब बीता है
नारी अग्निपरीक्षा दे, नर
मस्तक ऊंचा करके जीता है ।

उसे शोक नहीं , कोई शंका नहीं
अभागिन, तुम्हारी परिणीता है !
विदीर्ण हृदय का भार लिए
बोलो कोई कैसे जीता है ?

उस रात यशोधरा “जाग ” जाती !
अगर तुम्हें छोड़कर वो जाती !!
तो बुद्ध होने के मार्ग में,
क्या उसके सारथी होते तुम ?

मैं पूछती हूं बुद्ध तुम्हें
कितना बुद्ध हुए हो तुम ?!

राजभाषा प्रकोष्ठ के कार्य और उपलब्धियाँ

01 अप्रैल, 2023 से 31 मार्च, 2024

तिमाही के तहत अप्रैल से जून, 2023 में कार्य और उपलब्धियाँ

- राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक दिनांक 02 मई, 2023 को हुई।
- ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला दिनांक 23 मई, 2023 को मनाया गया।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट की सूचना अप्रैल से जून, 2023 को तैयार करके शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, क्षेत्रीय कार्यान्वयन समिति, कोलकाता, केन्द्रीय आयकर आयुक्त, नराकास, रांची में भेजा गया ।
- वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23 का कार्य आरंभ।

तिमाही के तहत जुलाई से सितंबर, 2023 में कार्य और उपलब्धियाँ

- राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक दिनांक 14 अगस्त, 2023 को हुई।
- ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला दिनांक 10 अगस्त, 2023 को मनाया गया।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट की सूचना जुलाई से सितंबर, 2023 को तैयार करके शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, क्षेत्रीय कार्यान्वयन समिति, कोलकाता, केन्द्रीय आयकर आयुक्त, नराकास, रांची में भेजा गया ।
- हिंदी में अधिकाधिक कामकाज करनेवाले अधिकारियों/कर्मचारियों को माननीय कुलपति महोदय द्वारा **'विश्वविद्यालय हिंदी गौरव सम्मान-2023'** के समिति का गठन किया गया और उसकी बैठक 18 सितंबर, 2023 को हुई।
- हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन 14 से 28 सितंबर, 2023 तक मनाया गया। जिसमें अनेक प्रकार प्रतियोगिताओं का आयोजन जैसे- जिसमें हिंदी प्रश्नोत्तरी, फ़िल्म समीक्षा,स्वरचित हिंदी कविता लेखन, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी वाद-विवाद, हिंदी संक्षेपण एवं पोस्टर और नारा लेखन प्रतियोगिता में क्रमशः प्रथम पुरस्कार बादल कुमार, रुद्र प्रताप, ख्याति पाल, रुद्र प्रताप, नेलन बुढ़, शिखा खलखो और भुवनेश कुमार प्रधान को; द्वितीय पुरस्कार आदित्य सिंह, अनुपम कुमार, लव कुमार मंडल, नफीस अहमद खान, शिवनारायण बिश्नोई, अतुल प्रिया और याचना कुमारी को तथा तृतीय पुरस्कार नितिन कुमार, लव कुमार मंडल, शिवकुमार मधुकर, अश्विनी कुमार, अनुराग कुमार, आलोक राज और श्रेजल वर्मा तथा पुरस्कार वितरण भी हुआ।

- हिन्दी दिवस समापन समारोह में हिन्दी में अधिकाकि कार्य करने वालों के लिए एक पुरस्कार रखा गया तथा **श्री प्रीतम कुमार कश्यप** को हिन्दी गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।
- राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक दिनांक 14 अगस्त, 2023 को हिन्दी पत्रिका का नामकरण और प्रकाशन की चर्चा हुई । जिसमें हिन्दी पत्रिका का नाम **भाषा कानन** रखा गया ।
- वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23 का बैठक के समिति का गठन किया गया और संकलन कार्य शुरू किया गया ।
- राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक दिनांक 14 अगस्त, 2023 को हिन्दी पत्रिका का नामकरण और प्रकाशन की चर्चा हुई । जिसमें हिन्दी पत्रिका का नाम भाषा कानन रखा गया ।

तिमाही के तहत अक्टूबर से दिसंबर, 2023 में कार्य और उपलब्धियाँ

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 13 अक्टूबर, 2023 को किया गया जिसमें डॉ.उपेन्द्र कुमार, हिन्दी अधिकारी (प्रभारी) ने भाग लिया।
- ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को मनाया गया।
- राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक दिनांक 21 दिसंबर, 2023 को हुई।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट की सूचना जुलाई से सितंबर, 2023 को तैयार करके शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, क्षेत्रीय कार्यान्वयन समिति, कोलकाता, केन्द्रीय आयकर आयुक्त, नराकास, रांची में भेजा गया ।
- वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23 का बैठक और संकलन कार्य पूरा किया गया, हिन्दी अनुवाद करा के निविदा किया गया और उसके बाद प्रेस में छपाई के लिए भेजा गया ।

तिमाही के तहत जनवरी से मार्च, 2024 में कार्य और उपलब्धियाँ

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर एक हिन्दी कार्यशाला/संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 10 जनवरी, 2024 को मनाया गया जिसमें श्री नफीस अहमद खान, हिन्दी अधिकारी (प्रभारी) और श्री अजय कुमार ने भाग लिया।

- वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23 की छपाई के बाद संसद के पटल में रखने हेतु श्री सी.पी.रत्नाकरण, परामर्शदाता, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली में वार्षिक प्रतिवेदन 2022-23 का 10 प्रति 11 जनवरी, 2024 को भेजा गया।
- हिन्दी कार्यशाला दिनांक 21मार्च, 2024 को मनाया गया।
- राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक दिनांक 11मार्च, 2024 को हुई।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट की सूचना जनवरी से मार्च, 2024 को तैयार करके शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, क्षेत्रीय कार्यान्वयन समिति, कोलकाता, केन्द्रीय आयकर आयुक्त, नराकास, रांची में भेजा गया ।

अप्रैल से जून, 2023

हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट

झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा दिनांक: 23.05.2023 को एक ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। इसमें कुल 35 कार्मिकों ने सहभागिता दर्ज़ कराई। कार्यशाला का विषय 'संसदीय राजभाषा समिति एवं प्रश्नावली' था।

इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में आई.आई.टी खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. राजीव कुमार रावत उपस्थित हुए। विश्वविद्यालय के कुलसाचिव और हिंदी अधिकारी ने विषय-विशेषज्ञ का स्वागत किया। डॉ राजीव कुमार रावत ने अपने व्याख्यान में सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग और संसदीय राजभाषा समिति के कार्यप्रणाली पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि संसदीय राजभाषा समिति एक संविधान प्रदत्त समिति है जिसमें 30 संसद सदस्य होते हैं जिसमें लोकसभा के 20 और राज्य सभा से 10सदस्य। इस समिति के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली प्रश्नावली की जानकारी विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण होनी चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि संसदीय राजभाषा समिति भारत की एकमात्र समिति है जो सीधे अपनी रिपोर्ट माननीय राष्ट्रपति को सौंपती है। इसलिए सरकार भी कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग और प्रचार-प्रसार के प्रति गंभीर दिखाई पड़ती है ।

इस कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. कुँज बिहारी पांडा ने कहा कि हिंदी के अधिकाधिक सुकर प्रयोग के लिए अंग्रेजी जैसी सुलभता और लचीलापन का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हिंदी जितनी सरल और सुलभ होगी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर इसका और मान बढेगा। विश्वविद्यालय के ओ.एस.डी. डॉ. जे.एन.नायक ने इस कार्यशाला की महत्ता और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय संविधान में हिन्दी की स्थिति पर विस्तार से बातें की गई हैं। इसलिए हमें विशेष रूप से हिन्दी के संदर्भ में संविधान के अनुच्छेद 343-351 को विशेष रूप से समझने की जरूरत है। हिन्दी अधिकारी बतौर डॉ. उपेन्द्र कुमार ने संसदीय राजभाषा समिति की स्थापना, उद्देश्य और उसकी कार्यशैली पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालते हुए की महत्ता पर चर्चा की। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव श्री उज्ज्वल कुमार तथा संचालन डॉ. उपेन्द्र कुमार 'सत्यार्थी' ने किया।

रिपोर्ट : डॉ.उपेंद्र कुमार

दैनिक जागरण - 24.05.23

सीयूजे में आनलाइन हिंदी कार्यशाला का हुआ आयोजन

रांची : सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड के राजभाषा प्रकोष्ठ ने संसदीय राजभाषा समिति प्रश्नावली विषय पर आनलाइन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के तौर पर आइआइटी खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डा. राजीव कुमार रावत उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि किसी भी सरकारी कार्यालय के लिए संसदीय राजभाषा समिति प्रश्नावली की गहन जानकारी आवश्यक है। जानकारी के अभाव में गलत रिपोर्ट भेजे जाने की अधिक संभावना रहती है। कहा कि संसदीय राजभाषा समिति सीधे अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपती है। इस बात से हिन्दी के प्रति सरकार की गंभीरता दिखाई पड़ती है। (जासं)

प्रभात खबर - 24.05.23

प्रभात खबर E Paper

बड़ी खबर राज्य मनोरंजन लाइफस्टाइल

सीयूजे में संसदीय राजभाषा समिति पर ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन

रांची: झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ ने 'संसदीय राजभाषा समिति/ प्रश्नावली' विषय पर ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया. इस अवसर पर मुख्य वक्ता के तौर पर आइआइटी, खड़गपुर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ राजीव कुमार रावत उपस्थित थे. उन्होनें कहा कि किसी भी सरकारी कार्यालय के लिए संसदीय राजभाषा समिति/ प्रश्नावली की गहन जानकारी होनी चाहिए. जानकारी के अभाव में गलत रिपोर्ट भेजे जाने की आशंका रहती है. उन्होंने कहा कि संसदीय राजभाषा समिति सीधे अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपती है. इस बात से हिन्दी के प्रति सरकार की गंभीरता दिखाई पड़ती है. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो कुंज बिहारी पांडा ने सुझाव देते हुए कहा कि जो प्रयोग के स्तर पर सुलभता अंग्रेजी में हैं वही सुलभता और लचीलापन हमें हिन्दी में भी अपनानी होगी तभी राष्ट्रीय-अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का प्रचार एवं विकास संभव है. विश्वविद्यालय के ओएसडी डॉ जेएन नायक, हिन्दी अधिकारी डॉ उपेन्द्र कुमार ने भी अपने विचार रखे. धन्यवाद ज्ञापन उपकुलसचिव उज्ज्वल कुमार ने किया.

हिन्दुस्तान - 24.05.23

संसदीय राजभाषा विषय पर कार्यशाला

रांची। केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड (सीयूजे) के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा मंगलवार को संसदीय राजभाषा समिति/प्रश्नावली विषय पर ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। मुख्य वक्ता आईआईटी खड़गपुर के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ राजीव रावत थे।

रावत कहा कि किसी भी सरकारी कार्यालय के लिए संसदीय राजभाषा समिति/प्रश्नावली की गहन जानकारी होनी चाहिए। इसके अभाव में गलत रिपोर्ट भेजे जाने की अधिक संभावना रहती है। संसदीय राजभाषा समिति सीधे अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपती है। इस बात से हिंदी के प्रति सरकार की गंभीरता दिखती है।

रजिस्ट्रार प्रो कुंज बिहारी पांडा बोले, जो प्रयोग के स्तर पर सुलभता अंग्रेजी में है। वही सुलभता और लचीलापन हमें हिन्दी में भी लागू करना होगा, तभी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रचार व विकास संभव है। विवि के ओएसडी डॉ जेएन नायक ने कहा कि भारतीय संविधान में हिन्दी की स्थिति पर विस्तार से विचार किया गया है।

जुलाई से सितंबर, 2023
हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट

दिनांक 10अगस्त 2023 को झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची के राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से 'विश्वविद्यालय में राजभाषा का क्रियान्वयन कैसे करें' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के हिंदी अधिकारी डॉ. विचित्र सेन गुप्त उपस्थित हुए। डॉ. विचित्र सेन गुप्त ने अपने व्याख्यान में कहा कि किसी भी संस्थान में राजभाषा हिंदी में कार्य करना उस संस्थान के प्रत्येक कर्मचारी का नैतिक दायित्व है। इस दायित्व का महत्त्व तब और भी बढ़ जाता है जब हम संविधान प्रदत्त 'क' राज्य की सूची में आते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का अर्थ अंग्रेजी का विरोध करना नहीं है। राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए, बल्कि यह है कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए द्विभाषी पद्धति को भी अपनाया जाए। उन्होंने विश्वविद्यालय के अधिकारियों-कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि फाइल पर अधिक से अधिक टिप्पण एवं प्रारूपण लेखन का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। यदि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण हिंदी में कार्य करना शुरू कर देंगे तब उनके अधीन कार्य कर रहे अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी को भी हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी तथा इससे राजभाषा नीति के अनुपालन में गति भी आएगी। डॉ. विचित्र सेन गुप्त ने अपने व्याख्यान के अंत में झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय में एक अनुवाद समिति गठित करने का भी सुझाव दिया जिसे अंग्रेजी भाषा के पत्रों का हिंदी में अनुवाद किया जा सके।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के.राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी क्षेत्र से आतें हैं, इसके बावजूद भी हम अपना कार्य अधिकतर अंग्रेजी में करते हैं। उन्होंने प्रश्न उठाते हुए कहा कि हम हिंदी 'क' क्षेत्र से होते हुए भी हिंदी में काम करने से क्यों बचते हैं, यह चिंता का विषय है। हमें अपनी भाषा में गर्व के साथ से कार्य करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए केवल व्याख्यान आयोजित से काम नहीं चलेगा बल्कि इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के ओएसडी डॉ.जे.एन. नायक ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा कि आजादी के 76 साल बाद भी हम हिंदी को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं, यह सोचनीय और चिंतनीय दोनों हैं।

उन्होंने कहा कि भले ही हिंदी अंग्रेजी के साथ देश की राजभाषा हो लेकिन संपूर्ण राष्ट्र की भाषा बनने की इसमें भरपूर क्षमता है। इस भाषा का निरंतर प्रयोग से ही इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाया सकता है।

इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो.कुंज बिहारी पंडा, उप-कुलसचिव श्री उज्जवल कुमार, पीआरओ नरेंद्र कुमार, सहायक कुलसचिव नफीस अहमद खान, जयेश कुमार, अभ्युदय अनुराग, रविकांत, शोएब, अजय कुमार आदि के अलावा विश्वविद्यालय के अनेक कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन प्रभारी तथा धन्यवाद ज्ञापन उप-कुलसचिव श्री अब्दुल हलीम ने किया।

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय,रांची
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND,RANCHI
(संसदीय अधिनियम के तहत 2009 में स्थापित विश्वविद्यालय)
हिंदी कार्यशाला
विषय: विश्वविद्यालय में राजभाषा का क्रियान्वयन कैसे करें
संरक्षक
मुख्य वक्ता
सह-संरक्षक
श्री के.के.राव
(कुलसचिव)

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ज्ञानात् हि बुद्धि कौशलम्
Knowledge To Wisdom
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ज्ञानात् हि बुद्धि कौशलम्
Knowledge To Wisdom
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ज्ञानात् हि बुद्धि कौशलम्
Knowledge To Wisdom
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND

दैनिक जागरण –11.08.23

राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए

जासं, रांची : सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड के राजभाषा प्रकोष्ठ ने विश्वविद्यालय में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला सीयूजे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डा. विचित्र सेन गुप्त उपस्थित रहे। डा. विचित्र सेन ने कहा कि राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए बल्कि यह है कि हिंदी को बढ़ावा देते हुए द्विभाषी पद्धति को अपनाई जाए। उन्होंने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को ले सीयूजे के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी तथा प्रारूपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। उन्होंने सीयूजे में अनुवाद समिति का गठन करने का सुझाव दिया। कुलसचिव केके राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी होते हुए भी अधिकतर कार्य अंग्रेजी में करते हैं। उन्होंने प्रश्न उठाते हुए कहा कि हम हिंदी के क्षेत्र में होते हुए भी हिंदी में काम करने से बचते हैं। ओएसडी डा. जेएन नायक ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा कि आजादी के 76 साल बाद भी हम हिंदी को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं, यह हमारे लिए सोचनीय है। सीयूजे के हिंदी अधिकारी डा. उपेंद्र कुमार सत्यार्थी ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है।

हिन्दुस्तान– 11.08.23

हिंदी को बढ़ावा दें, द्विभाषी पद्धति को अपनाएं : डॉ सेन

रांची, वरीय संवाददाता। केंद्रीय विवि झारखंड के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विवि में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें विषय पर कार्यशाला का आयोजन गुरुवार को हुआ। काशी हिंदू विवि के हिंदी अधिकारी डॉ विचित्र सेन ने कहा कि राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए, बल्कि यह है कि हिंदी को बढ़ावा देते हुए द्विभाषी पद्धति को अपनाया जाए।

उन्होंने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को लेकर विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी तथा प्रारूपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। उन्होंने विवि में अनुवाद समिति का गठन करने का सुझाव दिया।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव केके राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी होते हुए भी अधिकतर कार्य अंग्रेजी में करते हैं। ओएसडी डॉ जेएन नायक व हिंदी अधिकारी डॉ उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने हिंदी और राष्ट्रभाषा पर अपनी बातें रखीं। मौके पर प्रो कुंज बिहारी पंडा, उप कुलसचिव उज्जवल कुमार, पीआरओ नरेंद्र कुमार उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें विषय पर कार्यशाला का आयोजन

टिप्पणी तथा प्रारुपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें : डॉ. विचित्र सेन

प्रातः आवाज

मनातू: गुरुवार को झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा 'विश्वविद्यालय में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला की शुरूआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में काशी हिंदू

विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डॉ.विचित्र सेन गुप्त उपस्थित हुए। इस अवसर पर डॉ. विचित्र सेन ने अपने व्याख्यान में कहा कि राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए, बल्कि यह है कि हिंदी को बढ़ावा देते हुए द्विभाषी पद्धति को अपनाया जाए। उन्होंने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को लेकर विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी तथा प्रारूपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। इसके साथ उन्होंने विश्वविद्यालय में अनुवाद समिति का गठन करने का सुझाव दिया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के.राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी होते हुए भी अधिकतर कार्य अंग्रेजी में करते हैं। उन्होंने प्रश्न उठाते हुए कहा कि हम हिंदी 'क' क्षेत्र में होते हुए भी हिंदी में काम करने से बचते हैं।

विश्वविद्यालय के ओएसडी डॉ.जे.एन. नायक ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा कि आजादी के 76 साल बाद भी हम हिंदी को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं। यह हमारे लिए सोचनीय है। विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डॉ.उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और इस भाषा का निरंतर प्रयोग ही हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिला सकता है। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो.कुंज बिहारी पंडा, उप-कुलसचिव श्री उज्जवल कुमार, पी आर ओ नरेंद्र कुमार आदि के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' तथा धन्यवाद ज्ञापन उप-कुलसचिव श्री अब्दुल हलीम ने किया।

प्रभात खबर E Paper

होम राज्य मनोरंजन लाइफस्टाइल ध

सीयूजे में हिंदी कार्यशाला: BHU के हिंदी अधिकारी डॉ विचित्र सेन गुप्त ने बताया राजभाषा नीति का उद्देश्य

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डॉ विचित्र सेन गुप्त ने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को लेकर विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी हिंदी में करने की कोशिश करें.

By GuruSwarup Mishra | Updated Date Thu, Aug 10, 2023, 8:49 PM IST

हिंदी कार्यशाला में उपस्थित अतिथि | प्रभात खबर

अक्टूबर से दिसंबर, 2023
हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट

दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को राजभाषा प्रकोष्ठ, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा 'सरकारी कामकाज में अनुवाद की भूमिका' विषय पर एक तिमाही हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में पूर्णिया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. वंदना भारती उपस्थित रहीं। डॉ. वंदना भारती ने अपने व्याख्यान में कहा कि साहित्यिक अनुवाद की तुलना में कार्यालयी अनुवाद थोड़ा बोझिल है क्योंकि साहित्यिक अनुवाद में फैलाव की सुविधा है पर कार्यालयी अनुवाद में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। उन्होंने अनुवाद की सैद्धांतिकी और व्यावहारिक स्वरूप को कार्यशाला में वृहद रूप से समझाया। इसी क्रम में डॉ. वंदना ने कार्यालय अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि संविधान के भाग-17 के अनुच्छेद 347 से 351 में उल्लिखित द्विभाषा पद्धति की रीढ़ अनुवाद ही है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के.राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी होते हुए भी हिंदी में टिप्पण कार्य से बचते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय में अनुवाद से संबंधित नए-नए सॉफ्टवेयर या सामग्रियों को उपलब्ध होना चाहिए। विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रो. कुंज बिहारी पंडा ने कहा कि मैं अहिंदी भाषी राज्य से आता हूं उसके बावजूद भी गलतियों की परवाह किए बिना हिंदी में बोलता और पढ़ता हूं। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि गलतियों से घबराना नहीं चाहिए और लगातार हिंदी लिखने पढ़ने की कोशिश करते रहना चाहिए। परीक्षा नियंत्रक श्री बी.बी.मिश्रा ने विश्वविद्यालय में हिंदी कार्यशालाओं के नियमित रूप से आयोजित किए जाने पर हिंदी अधिकारी (प्रभारी) की प्रशंसा करते हुए कहा कि इससे विश्वविद्यालय के अधिकारियों-कर्मचारियों को हिंदी में अधिकाधिक कामकाज करने में मदद मिलेगी।

प्रभारी हिंदी अधिकारी डॉ.उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने हिंदी कार्यशाला की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का काम करता है। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव श्री उज्जवल कुमार, सहायक कुलसचिव नफीस अहमद खान, जनसंपर्क अधिकारी नरेंद्र कुमार आदि के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ.उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' तथा धन्यवाद ज्ञापन उप-कुलसचिव श्री अब्दुल हलीम ने किया।

रिपोर्ट : डॉ.उपेंद्र कुमार

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND, RANCHI
(संसदीय अधिनियम के तहत 2009 में स्थापित विश्वविद्यालय)
हिंदी कार्यशाला
विषय: सरकारी कामकाज में अनुवाद की भूमिका
संरक्षक
प्रो.क्षिति भूषण दास
(कुलपति)
मुख्य वक्ता
डॉ. वंदना भारती
(सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
पूर्णिया विश्वविद्यालय)
सह-संरक्षक
श्री के.के.राव
(कुलसचिव)
संचालक
डॉ.उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी'
(हिंदी अधिकारी (प्रभारी))
आयोजक: राजभाषा प्रकोष्ठ
दिनांक: 15 दिसंबर ,2023 समय: 3:00 बजे(अपराह्न) स्थान: प्रशासनिक भवन, प्रथम तल

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ज्ञानात् हि बुद्धि कौशलम्
Knowledge To Wisdom
CENTRAL UNIVERSITY OF JHARKHAND

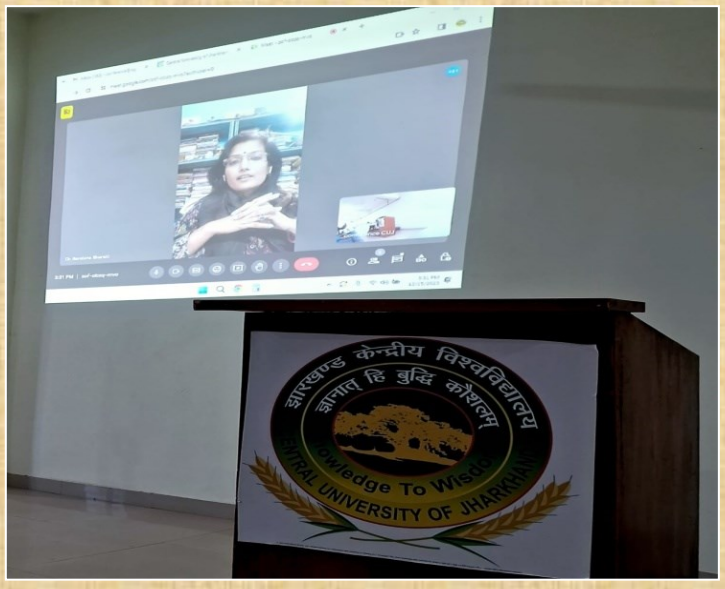

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह: रिपोर्ट

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग और राजभाषा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और विश्वविद्यालय कुलगीत से हुआ। उसके पश्चात् हिंदी विभाग के विद्यार्थियों ने जयशंकर प्रसाद और प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविता का सामूहिक गान किया। इस समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं के बीच अनुवाद की महत्ता बताते हुए कहा कि अनुवाद ही भाषाओं का भविष्य है।

मुख्य अतिथि प्रसिद्ध लेखक और कथाकर डॉ. पंकज मित्र ने कहा कि हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता उसका सर्व समावेशी चरित्र है। अतः हिंदी को सामंती व्यवहार से बचना चाहिए।स्वागत वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के राव ने कहा कि हमें अपना कामकाज अधिक से अधिक सरल और सहज हिंदी में करना चाहिए जिसे आसानी से समझा जा सके। कार्यक्रम के संयोजक और प्रभारी हिंदी अधिकारी डॉ. उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करते हुए कहा कि राजभाषा अधिनियम के तहत हम 'क' क्षेत्र में होने के नाते हमें कार्यालय के सभी कामकाज जैसे पत्राचार, टिप्पण और प्रारूपण का कार्य हिंदी में करें। डॉ. उपेंद्र ने इस अवसर पर गृह मंत्रालय द्वारा जारी गृह मंत्री के सन्देश का भी पाठ किया। हिंदी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी भाषा के ऐतिहासिक और संवैधानिक विकास पर एक लघु फिल्म प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम में शोधार्थी सूरज रंजन द्वारा रचित हिंदी ग़ज़ल का भी पाठ किया गया। मंच का संचालन हिंदी विभाग के छात्र भुवनेश कुमार प्रधान ने किया। धन्यवाद ज्ञापन उप कुलसचिव ले. कमा. उज्ज्वल कुमार ने किया। इस मौके पर प्रो. मनोज कुमार, प्रो. भगवान सिंह, प्रो. रत्नेश विश्वक्सेन, प्रो. आशीष सचान, प्रो. देवव्रत सिंह, प्रो. श्रेया भटाचार्जी, प्रो. जी पी सिंह, प्रो. डी बी लाटा, डॉ रवि रंजन, डॉ. जगदीश सौरभ, डॉ. राम किशोर सिंह, डॉ रमेश उरांव, डॉ. जया शाही, डा रत्नेश मिश्रा, श्री सुशांत कुमार, अमित कुमार यादव, उप कुल सचिव अब्दुल हलीम,परीक्षा नियंत्रक बी. बी. मिश्रा, वित्त अधिकारी, सहायक कुल सचिव नफीस अहमद खान, जनसंपर्क अधिकारी नरेंद्र कुमार सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद रहे ।

सीयूजे : हिंदी को सामंती व्यवहार से बचना चाहिए : डॉ. पंकज मित्र

रांची | झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग और राजभाषा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इसमें हिंदी विभाग के विद्यार्थियों ने जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविता का सामूहिक गान किया। हिंदी भाषा के ऐतिहासिक और संवैधानिक विकास पर लघु फिल्म प्रदर्शित की गई। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने किया। मुख्य अतिथि लेखक और कथाकार डॉ. पंकज मित्र ने कहा कि हिंदी को सामंती व्यवहार से बचना चाहिए।

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

विभा संवाददाता

रांची : झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग और राजभाषा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन और विश्वविद्यालय कुलगीत से हुआ। उसके पश्चात हिंदी विभाग के विद्यार्थियों ने जयशंकर प्रसाद और प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविता का सामूहिक गान किया। इस समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं के बीच अनुवाद की महत्ता बताते हुए कहा कि अनुवाद ही भाषाओं का भविष्य है। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध लेखक और कथाकार डॉ. पंकज मित्र ने कहा कि हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता उसका सर्व समावेशी चरित्र है। अतः हिंदी को सामंती व्यवहार से बचना चाहिए।स्वागत वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के राव ने कहा कि हमें अपना कामकाज अधिक से अधिक सरल और सहज हिंदी में करना चाहिए जिसे आसानी से समझा जा सके। कार्यक्रम के संयोजक और प्रभारी हिंदी अधिकारी डॉ. उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करते हुए कहा कि राजभाषा अधिनियम के तहत हम 'क' क्षेत्र में होने के नाते हमें कार्यालय के सभी कामकाज जैसे पत्राचार, टिप्पण और प्रारुपन का कार्य हिंदी में करें। डॉ. उपेंद्र ने इस अवसर पर गृह मंत्री के सन्देश का भी पाठ किया। हिंदी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी भाषा के ऐतिहासिक और संवैधानिक विकास पर एक लघु फिल्म प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम में शोधार्थी सूरज रंजन द्वारा रचित हिंदी गजल का भी पाठ किया गया। मंच का संचालन हिंदी विभाग के छात्र भुवनेश कुमार प्रधान ने किया।धन्यवाद ज्ञापन उप कुलसचिव ले. क. उज्ज्वल कुमार ने किया। इस मौके पर प्रो. आर. के. डे, प्रो. मनोज कुमार, प्रो. भगवान सिंह, प्रो. सुभाष चंद्र यादव, प्रो. रत्नेश विश्वक्सेन, प्रो. आशीष सचान, प्रो. देवव्रत सिंह, प्रो. श्रेया भटाचार्जी, प्रो. तपन बसितया, प्रो. रवींद्र नाथ शर्मा, डॉ. सुचिता सेन चौधुरी, डॉ रंजीत मंडल, उप कुल सचिव अब्दुल हलीम,परीक्षा नियंत्रक बी. बी. मिश्रा, नफीस अहमद खान, पीआरओ नरेंद्र कुमार आदि विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद थे।

हो चित्त जहाँ भयशून्य, माथ हो उन्नत,
हो ज्ञान जहाँ पर मुक्त, खुला यह जग हो-
घर की दीवारें बनें न कोई कारा,
हो जहाँ सत्तय ही स्त्रोत सभी शब्दों का,
हो लगन ठीक से ही सब-कुछ करने की,
हो नहीं रूढियाँ रचतीं कोई मरूथल-
पाये न सूखने इस विवेक की धारा ।
हो सदा विचारो-कर्मों की गति फलती,
बातें हों सारी सोची और विचारी,
हे पिता ! मुक्त वह स्वर्ग रचाओं हममें,
बस, उसी स्वर्ग में जागे देश हमारा।

(बांग्ला से अनुवाद)

रविन्द्रनाथ टैगोर

झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय,राँची

राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से
आप सभी को

धन्यवाद

डिज़ाइन-अरुण कुमार (परास्नातक, हिन्दी)